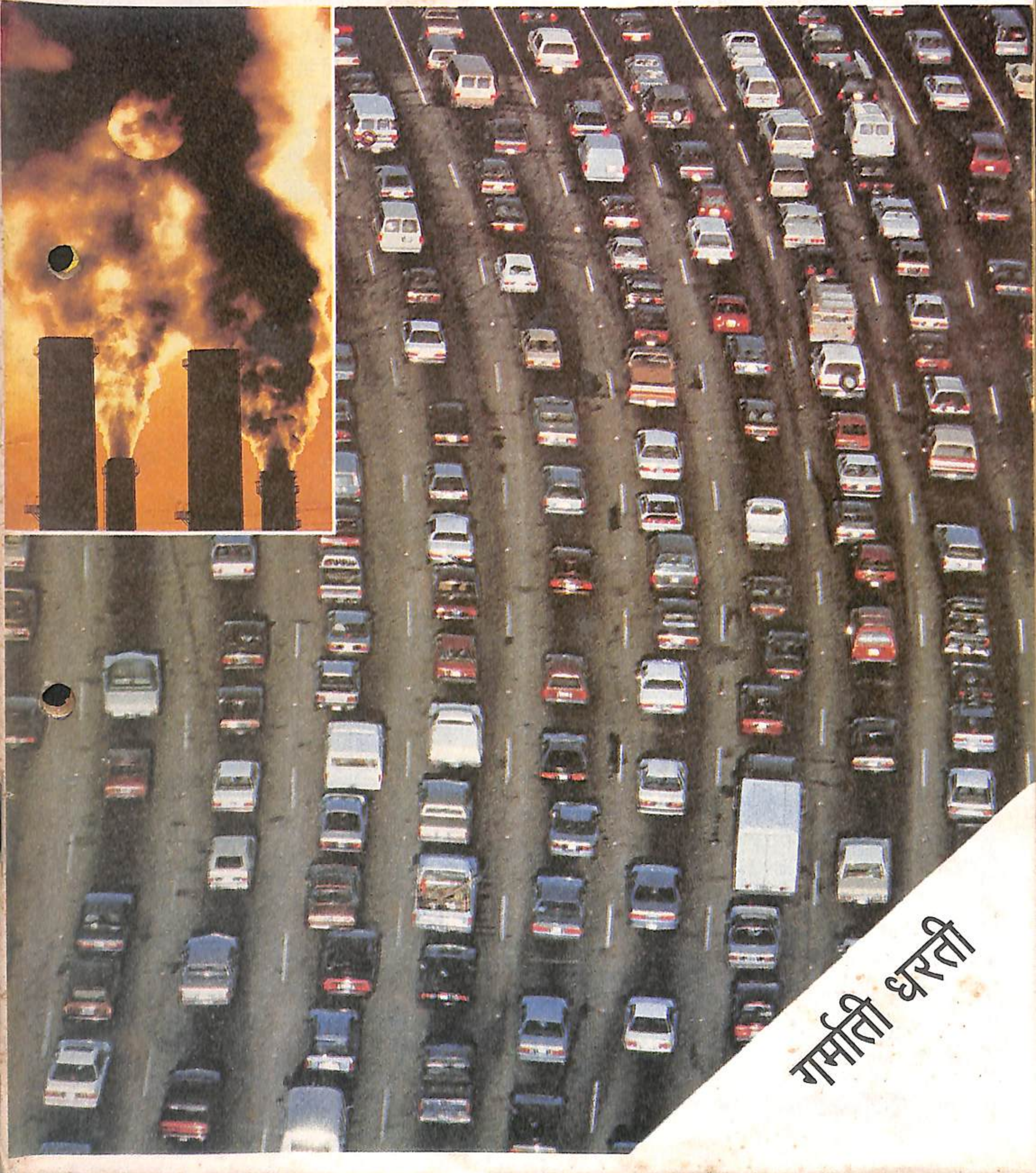
चकमक

अप्रैल, 1992

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 4.00



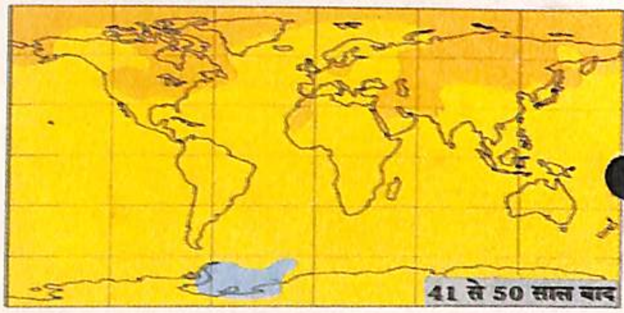
गर्माती धरती

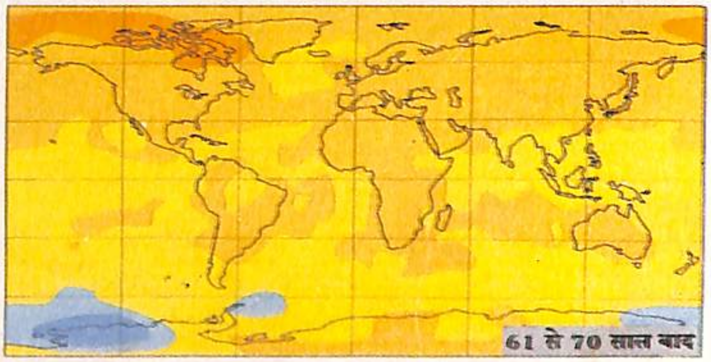


हमारी धरती विभिन्न कारणों से धीरे-धीरे गर्मा रही है। धरती के गर्माने से मौसम में भी बदलाव होते हैं। लेकिन इन बदलावों का अनुमान लगाना काफ़ी कठिन होता है। जैसे बादलों से धरती ठंडी भी होती है और गर्म भी। इसी तरह समुद्र भी मौसम के बदलाव में बहुत जटिल भूमिका निभाते हैं।

आने वाले सालों में धरती के अलग-अलग इलाकों में तापमान में अंतर आने की संभावना है। कम्प्यूटर की मदद से कार्बन डाईआक्साइड की बढ़ती मात्रा के आधार पर यह हिसाब लगाया गया है कि किस हिस्से में कितना तापमान बढ़ेगा।







आवरण परिचय

मोटर गाड़ियों में अधिक ईंधन जलने व कारखानों से निकलने वाले प्रदूषण से हमारी धरती का औसत तापमान बढ़ रहा है। इससे धरती के मौसम में बदलाव आने की संभावना है। लेकिन इसके लिए ज़िम्मेदार कौन है? किसकी अधिक ज़िम्मेदारी है? अमीर देशों की, जो बिना मोटर गाड़ियों के एक कदम भी नहीं चल सकते, कारखानों के बिना नहीं रह सकते या उन ग़रीबों की जो लकड़ी जलाकर खाना पकाते हैं? (आवरण तथा यहां पर प्रकाशित चित्र नेशनल ज्योग्राफ़िक से साभार)

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-7 अंक-10 अप्रैल, 1992

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मोहन श्रीवास्तव

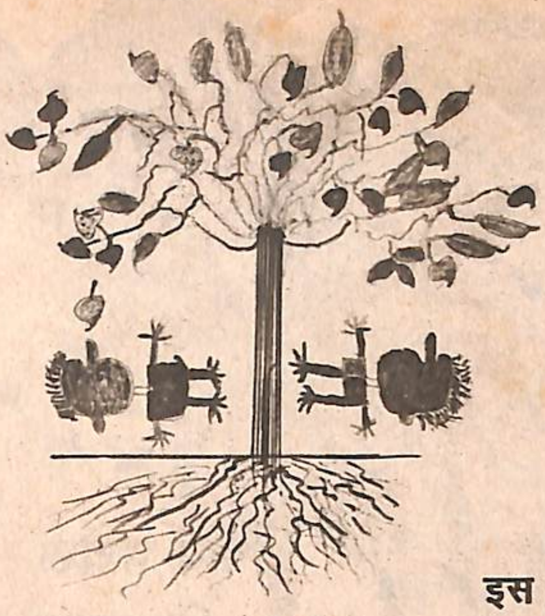
चकमक का चंदा

एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए

डाक खर्च मुफ़्त
चंदा, मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208 अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016 (म.प्र.)
फ़ोन : 563380

कागज़ : 'यूनिसेफ़' के सौजन्य से। सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)



मुकेश कुमार पाटीदार, आठवीं, बालगढ़, देवास

इस अंक में

विशेष

कविताएं

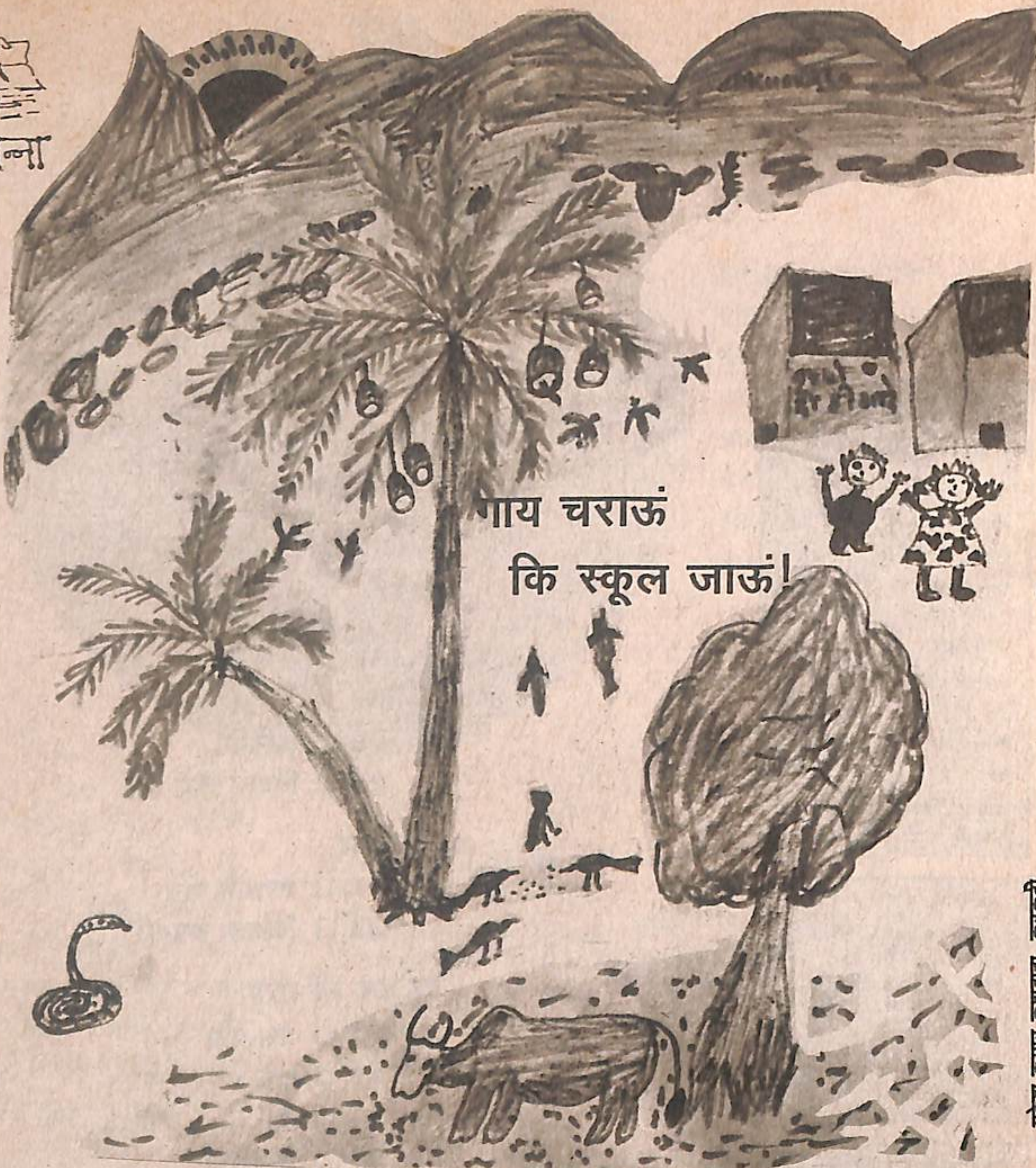
कहानियां

हर बार की तरह

और यह भी

आवरण परिचय बाएं पृष्ठ पर।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।



गाय चराऊं कि स्कूल जाऊं!

मुकेश कुमार कुशवाहा, करकटी

एक बार मेरे पापा जी गाय लाए। मेरी मां कहने लगी कि बेटा तुम गाय चरा लाओ। मैंने कहा कि मां मैं स्कूल के पीछे नहीं जाती। तो मां ने कहा कि आज तुझे खाना नहीं मिलेगा।

मैंने अपनी सहेली की दादी से कहा कि दादी देखो मेरी मां मुझे मार रही है। तो दादी ने कहा कि मैं तुम्हारी मां की शिकायत पापाजी से करूंगी। मैंने उनकी बात मान ली और गाय चराने चली गई।

इतने में गुरू जी बाहर से आए, उन्होंने कहा कि तुम स्कूल क्यों नहीं आई? मैंने कहा कि गुरू जी आज मेरी मां कह रही थी कि गाय चरा लाओ।

गुरू जी मेरे घर गए। मैंने मां से कहा कि मां अपने घर गुरू जी आए हैं, तो मां ने कहा कि गुरूजी-उरूजी गए भाड़ में अपना काम कर नहीं तो तेरी टांगें तोड़ दूंगी।

❑ कुमारी पप्पी जैन, पांचवीं. मड़देवरा, छतरपुर



बस्ता

ओ मेरे अच्छे प्यारे बस्ता
तू बच्चों पर रोब क़स्ता!

ठिठुरता जाड़ा हो
या बरसाती अषाढ़ हो
या आग बरसाती गर्मी हो
फिर भी तुम्हें न फ़र्क पड़ता
ओ मेरे प्यारे बस्ता

हो जाऊं चाहे बीमार
तेरे लिए बनता कार
भूखा मरूं मैं चाहे
मूल्य तेरा न हो सस्ता
ओ मेरे प्यारे बस्ता!

❑ बिंदु साहू, पांचवीं, भोथली, दुर्ग



पंकज पाठक, चौथी, मन्दसौर

ऐसी हुई पहली पिकनिक



प्रदीप मालवीय, आठवीं, ओबेदुल्लागंज



मेरा पन्ना

शाम का समय था। मैं और मेरे दो मित्र अभय और बंटू मैदान में बैठे गप मार रहे थे, कि इसी बीच बंटू बोला, "कल वर्ष का प्रथम दिन है क्यों न पिकनिक मनाने चला जाए।"

उसकी बात पर हम दोनों ने सहमति प्रकट की। लेकिन समस्या यह थी कि पिकनिक मनाने चला कहां जाए? अंत में हम लोगों ने नदी के पार एक घने खेत में पिकनिक मनाने का निश्चय किया। फिर याद आया कि वहां जाकर हम लोग बनाएंगे क्या? इस पर मैंने कहा, "खीर, पुरी और आलूदम बना लेंगे।"

विचार करने पर पता चला कि काफ़ी महंगा पड़ेगा। फिर बंटू बोला, "क्यों न दाल, भात और सब्ज़ी बनाई जाए।"

इस पर सभी सहमत हो गए। कुछ पल बाद रात हो गई और हम लोग अपने-अपने घर चले गए। दूसरे दिन सुबह हुई और मैं अपने घर से एक मिट्टी का चूल्हा और जलावन का सामान आदि बांध कर तैयार हो गया। उधर बंटू और अभय ने भी बरतन और भोजन की सामग्री बांध ली थी। उसी समय मेरे चाचा जी आ गए और बोले, "क्यों भाई, कहां जाने की तैयारी हो रही है।"

हम लोगों ने झट से उन्हें अपनी योजना से अवगत कराया पर उन्होंने जाने को मना कर दिया। लेकिन हम लोग कब मानने वाले थे। अंत में उन्होंने जाने को कह तो दिया पर एक शर्त रख दी कि आज हमें घर का खाना नहीं मिलेगा।

कुछ देर बाद हम लोग नाव से नदी पार करके खेत में पहुंचे। ज्यों ही सामान निकालना शुरू किया तो याद आया कि दियासलाई लाना तो भूल ही गए। फिर मुझे ही दियासलाई लाने भेजा गया। उस समय तक कुछ हवा भी तेज़ चलने लगी थी और नदी को पार करके दियासलाई लाना था। मैं नाव को ढकेलकर चढ़ तो गया पर नाव तेज़ हवा के कारण आगे बढ़ने के बजाय धारा की दिशा में आगे बढ़ने लगी। अब तो मुझे डर लगने लगा और मैंने भगवान का नाम लेना शुरू किया तो शायद ही कोई छूटे हों।

जैसे-तैसे नाव किनारे लगी और मैं दौड़कर घर पहुंचा। वहां से दियासलाई ली और फिर वापस आया। लौटते समय गांव के ही एक आदमी मिल गए जिन्होंने आराम से नदी पार करा दी। दियासलाई लेकर मैं वहां पहुंच तो गया पर अब चूल्हा महाराज की बारी आई तो मानो वे पहले ही से गुस्सा होकर बैठे हो और जलने का नाम ही न लें। धुएं से हम लोगों की आंखें लाल हो गईं।

फिर किसी तरह चूल्हा जला और हम लोगों ने कुछ जला कुछ पका भोजन तैयार किया। पर अपना दही किसे खट्टा लगता है। उस दिन वही खाकर हमें रहना पड़ा। इस प्रकार हमने पहली पिकनिक मनाई।

❑ **राघवेंद्र कुमार, लोहिया नगर, पटना**

कट्टी

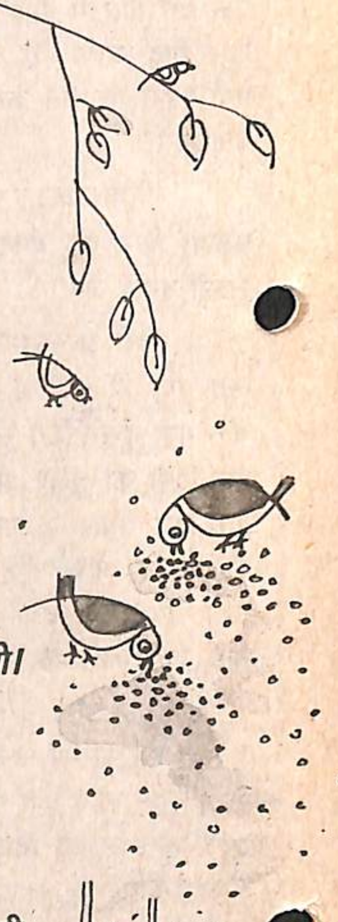
मेरे स्कूल में एक दिन मेरी शिक्षिका के साथ एक नई लड़की आई। कक्षा में टीचर जी ने उस लड़की का नाम व परिचय सभी लड़कियों को बताया। इसके बाद कुछ दिनों में उससे मेरी गहरी दोस्ती हो गई। मेरे स्कूल के कमरे कच्चे व खपरैल वाले हैं। वहीं पर कमरे के अंदर खपरैल के नीचे चिड़िया ने घोंसले में अंडे दिए थे। चिड़िया के उन अंडों में इस लड़की (मेरी सहेली) ने एक दिन दो अंडे टेबिल के सहारे चढ़कर निकाले और फोड़ दिए। उसकी इस हरकत से मुझे बहुत दुख हुआ और गुस्सा भी आया। मैंने उससे बहुत कुछ ऊल-जलूल कह दिया इस पर उससे मेरी ख़ूब लड़ाई हुई और फिर कट्टी हो गई।

❑ **कल्पना सिंह परिहार, सातवीं, देवरी हटाई, कटनी**



चिड़िया





चीं-चीं-चीं-चीं गाती चिड़िया।
इस डाली से उस डाली पर
बैठा करती है उड़-उड़कर।
सबको खूब सुहाती चिड़िया!

आंगन-आंगन चुगती दाने
नल पर आती बैठ नहाने।
पंख भिगो सुख पाती चिड़िया!

कभी हमारे पास आ जाती
रह-रहकर आंखें मटकाती।
कहकर कुछ उड़ जाती चिड़िया!

कभी परस्पर है लड़ जाती
फिर खुश होकर चोंच मिलाती।
ढेरों प्यार लुटाती चिड़िया!

भाता इसे न बंधकर रहना
जाना हरदम खुलकर उड़ना!
मुक्ति मंत्र सिखलाती चिड़िया!

□ राजनारायण चौधरी



चित्र : प्रवीण नगरकर

लू से सावधान!

तो लो ठंड के बाद तेज़ गर्मी आ ही पहुंची। मई-जून के महीने में अपने देश के कुछ मैदानी इलाकों का तापमान 104° फैरनहाइट (40° सेंटीग्रेड) के भी ऊपर पहुंच जाता है। तेज़ गर्मी में चलने वाली हवाएं शरीर को जैसे झुलसा कर रख देती हैं। इन हवाओं को ही लू के नाम से पुकारते हैं।

लू क्यों लगती है? यह समझने के लिए हमें अपने शरीर के बारे में भी थोड़ा जानना होगा। मनुष्य गर्म ख़ून वाला प्राणी है। यानी सामान्य अवस्था में हमारे शरीर के भीतरी हिस्से का तापमान हर मौसम में 98° से 99° फैरेनहाइट के बीच रहता है। अगर शरीर का तापमान इससे कम या अधिक हो जाता है, तो इसका मतलब है कि शारीरिक क्रियाएं अस्त-व्यस्त हो गई हैं।

हमारे शरीर में ऐसी व्यवस्था होती है कि वातावरण का तापमान कम या अधिक होने पर भी भीतर का तापमान बदलता नहीं है। वातावरण के तापमान में होने वाली घट-बढ़ की सूचना त्वचा में फैली हुई तंत्रिकाओं के माध्यम से मस्तिष्क तक पहुंचती है और वह तापमान की इस घट-बढ़ से शरीर को प्रभावित होने से बचाने के उपाय करता है।

अगर वातावरण का तापमान कम है तो शरीर अपनी गर्मी को बाहर नहीं निकलने देता, उल्टे जैविक क्रियाओं द्वारा उर्जा पैदा करके शरीर को गरम रखता है।

अगर वातावरण का तापमान बढ़ गया है तो मस्तिष्क से संदेश पाकर पसीने की ग्रंथियां सक्रिय हो जाती हैं। अधिक पसीना निकलने और उसके भाप बनकर उड़ने में उर्जा ख़र्च होती है, इससे शरीर को ठंडापन महसूस होता है। त्वचा के माध्यम से भी शरीर से उर्जा या गर्मी बाहर निकलती है।

हमारा शरीर कितनी गर्मी सहन कर सकता है, यह आसपास के वातावरण की गर्मी, नमी, हवा के बहाव और इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस तरह का काम कर रहे हैं। यदि हवा में नमी नहीं हो तो हमारा शरीर वातावरण का 150° फैरेनहाइट तापमान भी सहन कर सकता है। लेकिन हवा में यदि नमी की मात्रा अधिक हो तो हम 100° फैरेनहाइट तापमान भी सहन नहीं कर सकते।

अब जब बहुत अधिक गर्मी हो और तेज़ धूप पड़ रही हो और ऐसे में देर तक धूप में रहना पड़े, तो शरीर के तापमान को नियंत्रित करने वाली शरीर की व्यवस्था गड़बड़ा जाती है। इसके फलस्वरूप पहले तो शरीर से पसीना निकलना बंद हो जाता है, जिससे शरीर का तापमान बहुत अधिक बढ़ने लगता है। तापमान बढ़ने से शरीर की कोशिकाओं का रासायनिक संतुलन गड़बड़ा जाता है। मस्तिष्क की कोशिकाएं सबसे पहले प्रभावित होती हैं। बाद में शरीर के अन्य अंगों जैसे गुर्दे और ख़ून ले जाने वाली नलियों की कोशिकाएं प्रभावित होती हैं। इसी को लू लगना कहते हैं।

कभी-कभी लू थोड़े गरम, लेकिन नम वातावरण में कई घंटे लगातार मेहनत का काम करने पर भी लग जाती है। वैसे लू बूढ़ों और बच्चों को जल्दी लगती है।

लू लगने पर तेज़ सिरदर्द होता है, प्यास बहुत लगती है, उल्टी करने का मन होता है, बेहोशी–सी छाने लगती है और भूख नहीं लगती है। हालत अधिक ख़राब होने पर रोगी बेहोश हो जाता है। त्वचा एकदम शुष्क हो जाती है। शरीर का तापमान 105° फैरेनहाइट के आसपास या उससे भी अधिक हो जाता है। इससे हृदय भी प्रभावित हो सकता है। हृदय की धड़कन रुक जाने से रोगी की मृत्यु भी हो सकती है।

लू लग जाने पर जितनी जल्दी हो सके, उपचार शुरू कर दो। सबसे पहले रोगी को ठंडी और हवादार जगह में ले जाओ। उसके कपड़े ढीले कर दो या उतार दो। फिर पूरे शरीर को ठंडे पानी

(शेष पृष्ठ 30 पर)

विशेष



गर्माती धरती

सन् 1987 में मालदीव के राष्ट्रपति ने संयुक्त राष्ट्रसंघ को एक अजीब-सा पत्र लिखा। उन्होंने लिखा कि ग्रीन हाउस असर के कारण उनका पूरा देश समुद्र में डूब जाएगा। उसे बचाया जाए। एक साल बाद एक अन्य देश तुवालु के प्रधानमंत्री ने भी ऐसी ही आशंका जताते हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ को पत्र लिखा।

'ग्रीन हाउस' तब से ही एक बहुत बदनाम शब्द हो गया है। तुम भी सोच रहे होगे आख़िर यह है किस बला का नाम! अगर हम इस शब्द का सीधा-सादा अनुवाद करें, तो हिंदी में इसे 'हरा घर' कहेंगे। 'हरा घर' यानी हरियाली से भरपूर घर, यह तो बहुत सुंदर चीज़ है! फिर इससे इतना डर क्यों?

वास्तव में दुनिया के कई इलाके ऐसे हैं, जहां बहुत कड़ाके की ठंड तो पड़ती है पर गर्मी ज़्यादा नहीं होती। ऐसी हालत में वहां कई पेड़-पौधे पनप ही नहीं पाते। इससे निपटने के लिए वहां के लोगों ने एक विशेष तरीक़ा खोज निकाला है। वहां ऐसे बगीचे बनाए जाते हैं, जिनकी दीवाल और छत कांच की बनी होती हैं। ग्रीन हाउस का कांच सूरज की धूप को तो अंदर आकर बगीचे को गरम करने की इजाज़त देता है, मगर बाहर जाती गर्मी को पूरी तरह नहीं जाने देता। दूसरे शब्दों में वह बाहर जाने वाली गर्मी का कुछ हिस्सा चुरा लेता है, जिसके कारण ग्रीन हाउस के अंदर का तापमान (कांच की बदौलत) बढ़ जाता है। मतलब बाहर के तापमान के मुकाबले अंदर का तापमान ज़्यादा रहता है। इन बगीचों को ही ग्रीन हाउस या हरा घर कहा जाता है। इन बगीचों में सब्ज़ी आदि उगाई जाती है।

पर मालदीव और तुवालु के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री जिस ग्रीन हाउस से चिंतित हैं, उसका इससे कोई संबंध नहीं। हां, बस दोनों का असर मिलता-जुलता है। पर नाम तो नाम है, एक बार पड़ गया, सो पड़ गया! तो आओ, देखते हैं कि यह ग्रीन हाउस क्या है?

यह तो तुम्हें पता ही है कि धरती को गर्मी, सूरज से मिलती है। जब दिन में सूरज की किरणें धरती पर पड़ती हैं तो वह धीरे-धीरे गर्म होने लगती है। धरती कितनी गर्म होगी, यह दिन की लंबाई पर निर्भर करता है। जितना लंबा दिन होगा, धरती को गर्म होने के लिए उतना ही ज़्यादा समय मिलेगा। यदि दिन छोटा होगा, तो सूरज की किरणें कम



समय के लिए धरती पर पड़ेंगी। दूसरी बात यह है कि धरती के जिन इलाकों पर सूरज की किरणें सीधी पड़ती हैं वे ज़्यादा गर्म होते हैं। जहां सूरज की किरणें तिरछी पड़ती हैं, वे इलाके कम गर्म होते हैं।

सूरज से आती हुई जो किरणें हमें दिखाई देती हैं वे वास्तव में प्रकाश की किरणें होती हैं। लेकिन इन किरणों के साथ-साथ गर्माहट पैदा करने वाली किरणें भी होती हैं, जो हमें दिखाई नहीं देतीं।

तो दिन भर, सूरज की किरणों से धरती गर्म होती रहती है। दिन के बाद आती है रात! रात का मतलब है, अब सूरज की किरणें धरती के उस हिस्से पर नहीं पड़ रही हैं। दिन भर की तपी हुई धरती गर्मी छोड़ने लगती है, यानी ठंडी होने लगती है। धरती जो गर्मी छोड़ती है वह आमतौर पर आकाश में बिखर जाती है। पर इस बिखरने के वक्त ही ग्रीन हाउस बीच में टांग अड़ा देता है। कैसे?

धरती रात में जो गर्मी छोड़ती है, वह उन्हीं किरणों के रूप में होती है, जो हमें दिखाई नहीं देतीं। परंतु ये किरणें सूरज से आने वाली किरणों से कई मायनों में भिन्न होती हैं। चूंकि किसी गर्म चीज़ में से कैसी किरणें निकलेंगी, यह उसके तापमान पर निर्भर करता है। ख़ैर.... यदि धरती के आसपास वायुमंडल नहीं होता, तो गर्मी की ये किरणें सीधी आकाश में चली जातीं। लेकिन हमारी धरती के आसपास वायुमंडल यानी हवा का घेरा है। इस वायुमंडल में कई गैसें हैं, जैसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन डाईआक्साइड, पानी की भाप आदि। इनमें से कुछ गैसें ऐसी हैं जो धरती द्वारा छोड़ी गई गर्मी की किरणों को रोक लेती हैं। और फिर ये किरणें आकाश में बिखरने के बजाय वापस धरती पर ही लौट आती हैं। एक तरह से ये गैसें यहां ग्रीन हाउस के कांच का काम करती हैं। इसीलिए इसे ग्रीन हाउस क्रिया कहते हैं। इस क्रिया की वजह से हमारी धरती रात को भी थोड़ी ज़्यादा गर्म बनी रहती है। थोड़ी ज़्यादा किससे? जैसे कि चांद से! हां, अपने चांद से।

क्या तुम्हें मालूम है कि चांद पर कोई वायुमंडल नहीं है? और क्या तुम्हें मालूम है कि चांद पर गर्मी-सर्दी के क्या हाल हैं? हालत यह है कि चांद पर जब सूरज की किरणें पड़तीं हैं तो वहां का तापमान 100° सेंटीग्रेड हो जाता है-यानी पानी उबलने जितना! और जब रात होती है, तो चांद पर तापमान शून्य से 150° सें. नीचे चला जाता है। इसका एक कारण तो यह है कि चांद पर दिन-रात बहुत बड़े-बड़े होते हैं। पृथ्वी के हिसाब से वहां दिन-रात चार-चार सप्ताह के होते हैं। यानी वहां लगातार चार सप्ताह तक प्रकाश रहता है और फिर लगातार चार सप्ताह तक अंधेरा। वैसे चांद का औसत तापमान-**18**° सें. है। इतना कम तापमान इसलिए है क्योंकि चांद पर वायुमंडल जैसी कोई चीज़ नहीं है।



अब ज़रा धरती के बारे में सोचो। यदि धरती पर भी वायुमंडल नहीं होता, तो धरती का औसत तापमान भी-**18**° सें. होता। परंतु धरती का औसत तापमान 15° सें. है। यानी वायुमंडल की वजह से हमारी धरती और चांद के औसत तापमान में 33° सें. का अंतर है। दूसरे शब्दों में यह अंतर 'ग्रीन हाउस असर' के कारण है। ग्रीन हाउस असर के कारण ही हमारी धरती न तो बहुत गर्म होती है और न बहुत ठंडी।

ज़रा सोचो यदि ग्रीन हाउस असर न होता, तो क्या धरती वैसी होती जैसी आज है? यदि यहां का तापमान भी शून्य से डेढ़ सौ डिग्री कम हो जाता, तो क्या यहां जीवन रह पाता? क्या 100° सें. के तापमान पर कोई जीव बच भी पाएगा? यह पृथ्वी हरी-भरी है, जीव-जंतु यहां उछलकूद मचाए रहते हैं, हम यहां रहते हैं। यदि ग्रीन हाउस क्रिया न हो, तो सबकी या तो कुल्फी जम जाएगी या फिर भाप बनकर उड़ जाएंगे। तो फिर क्यों लोग ग्रीन हाउस को कोस रहे हैं, भला-बुरा कह रहे हैं? कुछ न कुछ तो कारण ज़रूर होगा! वह कारण क्या है?

सबसे पहले तो यह देखें कि वायुमंडल की कौन-सी गैसें हैं, जो ग्रीन हाउस क्रिया करती हैं। इन गैसों में पानी की भाप, कार्बन डाईआक्साइड और नाइट्रस आक्साइड प्रमुख हैं। इनके अलावा कुछ और गैसें भी अपना प्रभाव डालती हैं, लेकिन वे



बहुत थोड़ी मात्रा में होती हैं।

अब किसी भी चीज़ की अति तो अच्छी नहीं होती। माना कि गाज़र खाना सेहत के लिए अच्छा है, पर यह कहां की बात हुई कि गाजर खा-खाकर हाज़मा ही ख़राब कर लिया जाए। इसी तरह यदि ग्रीन हाउस प्रभाव भी ज़रूरत से ज़्यादा होने लगे तो क्या होगा? यह तो हम देख ही चुके हैं कि ग्रीन हाउस प्रभाव के कारण ही धरती की सारी गर्मी आकाश में नहीं बिखर पाती, और थोड़ी गर्मी धरती पर वापिस पहुंच जाती है। अब यदि ग्रीन हाउस प्रभाव ज़्यादा होने लगे, तो ज़्यादा गर्मी धरती पर वापिस पहुंचने लगेगी। इससे धरती का तापमान और बढ़ जाएगा! बस यहीं पेंच है। वैज्ञानिकों का कहना है कि आजकल ग्रीन हाउस प्रभाव कुछ ज़्यादा ही होने लगा है। इसीलिए धरती पहले की अपेक्षा थोड़ी ज़्यादा गर्म रहने लगी है।

तुम कहोगे, ऐसी तो कोई बात नहीं है। अभी-अभी तो ठंड का मौसम गया है, और क्या कड़ाके की ठंड पड़ी थी। रजाई में दुबककर सोना पड़ता था। कहां है ज़्यादा गर्मी?

परंतु वैज्ञानिकों का कहना है कि यह ठंडी-गर्मी तो अपनी जगह चलती रहती है, लेकिन धरती का औसत तापमान साल-दर-साल बढ़ता जा रहा है। दूसरे शब्दों में वैज्ञानिकों का कहना है कि घट-बढ़ को छोड़ दें, तो मोटे तौर पर हर साल, पिछले साल के मुक़ाबले ज़्यादा गर्म होगा। या यह कहना ज़्यादा ठीक होगा कि हर दशक (यानी दस साल की अवधि) पिछले दशक से औसत रूप में ज़्यादा गर्म होता जा रहा है। वैज्ञानिकों ने तो यह भी नाप लिया है कि एक दशक में औसत तापमान कितना बढ़ रहा है। उनके हिसाब से प्रति दशक धरती का औसत तापमान 0.2° सें. से 0.5° सें. की रफ़्तार से बढ़ रहा है। मतलब धरती का तापमान अगले 100 सालों में 2° सें. से 5° सें. तक बढ़ जाएगा।

ऐसा लगता है कि वैज्ञानिक लोग तिल का ताड़ बनाने में माहिर हैं। अरे, एक-दो डिग्री बढ़ने से क्या होता है? मुझे भी पहले ऐसा ही लगा था कि बात छोटी-सी है और ये वैज्ञानिक जबरन शोर मचा रहे हैं। परंतु थोड़े ठंडे दिमाग़ से सोचने पर लगा कि वास्तव में बात छोटी-सी नहीं है. तापमान बढ़ने के कई प्रभाव होंगे!

जैसे यह तो तुम्हें पता ही होगा कि गर्मी पाकर चीज़ें फैलती हैं। वैज्ञानिकों को डर है कि समुद्र का तापमान बढ़ने से वहां का पानी फैलेगा और आसपास की ज़मीन समुद्र में डूब जाएगी। उनका अंदाज़ है कि हर दस साल में समुद्र की सतह 5 से लेकर 24 सें.मी. तक ऊपर उठ सकती है। मतलब 100 सालों में यह उठाव 50 सें.मी. से लेकर 2.5 मीटर तक हो सकता है। अब तुम समझ सकते हो कि मालदीव के राष्ट्रपति और







तुवालु के प्रधानमंत्री क्यों परेशान हो रहे हैं। उनके देश तो पूरे के पूरे टापू हैं। इन टापुओं की अधिकतर ज़मीन समुद्र सतह से 1 से 3 मीटर की ऊंचाई पर है। अब यदि समुद्र 2.5 मीटर ऊपर उठ गया, तो उन बेचारों के तो पूरे देश ही डूब जाएंगे!

मालदीव-तुवालु ही नहीं अन्य सभी देशों में समुद्र तट की बहुत सारी ज़मीन समुद्र में डूब जाएगी। समुद्र का खारा पानी जमीन में घुसने लगेगा और पीने के पानी की किल्लत और बढ़ जाएगी।

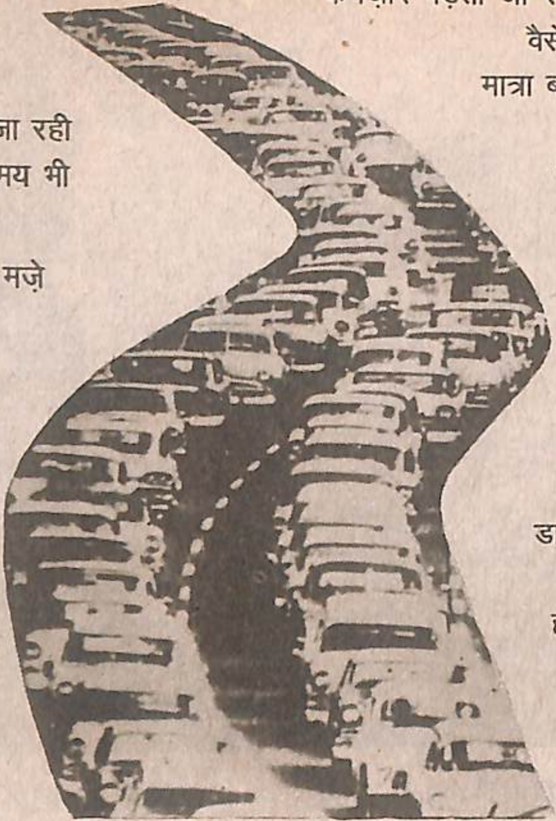
वैज्ञानिक यह भी कहते हैं कि पूरी धरती का तापमान हर जगह एक-सा नहीं बढ़ेगा। अलग-अलग जगह, अलग-अलग बढ़ोत्तरी होगी।

लेकिन इस असमान बढ़ोत्तरी के भी असर होंगे। हवा व पानी की धाराओं में बदलाव होंगे, बारिश में बदलाव होंगे, खेती-बाड़ी पर असर पड़ेगा। यानी वैज्ञानिकों की बात मान लें, तो धरती का चेहरा ही बदल जाएगा।

अब सवाल यह उठता है कि ग्रीन हाउस असर क्यों बढ़ रहा है? यह तो हम देख ही चुके हैं कि वायुमंडल में ऐसी गैसें होती हैं जो ग्रीन हाउस असर पैदा करती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार वायुमंडल में इन गैसों की मात्रा बढ़ रही है। फलस्वरूप ग्रीन हाउस असर भी ज़्यादा हो रहा है। जैसे वैज्ञानिकों ने नाप-जोखकर बताया है कि पिछले सौ सालों में वायुमंडल में कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा 25% बढ़ गई है। ऐसा माना गया है कि कुल ग्रीन हाउस असर में से आधा तो कार्बन डाई आक्साइड की वजह से होता है। बाक़ी आधा मीथेन, क्लोरोफ्लोरो कार्बन, नाइट्रस आक्साइड वग़ैरह गैसों की वजह से होता है। लेकिन कम मात्रा में होने के बावजूद ये गैसें कार्बन डाईआक्साइड के मुक़ाबले ज़्यादा शरारती होती हैं। इनकी थोड़ी-सी भी मात्रा बहुत अधिक ग्रीन हाउस असर पैदा कर सकती है। वायुमंडल में मीथेन की मात्रा ही सालाना 1.4% की दर से बढ़ रही है। अब तुम यह भी पूछ सकते हो कि ये मात्राएं क्यों बढ़ रही हैं?

कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा में होने वाली बढ़ोत्तरी तो समझना आसान है। कोई भी चीज़ जब जलती है तो कार्बन डाईआक्साइड पैदा होती है। यानी खाना पकाने के लिए यदि लकड़ी, कोयला, कंडे, मिट्टी का तेल, गैस आदि ज़्यादा मात्रा में जलाई जाएं तो कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा

बढ़ेगी। फिर डीज़ल, पेट्रोल आदि का उपयोग भी बढ़ता ही जा रहा है। इससे भी कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा बढ़ती जा रही है। जीव-जंतुओं के सांस लेते समय भी कार्बन डाईआक्साइड बनती है।



इस संबंध में एक और मज़े की बात है। पेड़-पौधे कार्बन डाईआक्साइड और पानी को जोड़कर शक्कर, मंड, सेल्यूलोज आदि बनाने की क्षमता रखते हैं। जब तक धूप रहती है, पेड़-पौधे यह काम करते रहते हैं। इस क्रिया की वजह से वायुमंडल में कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा कम हो जाती है और ग्रीन हाउस असर भी कम हो जाता है। अब जंगल कटने की वजह से पेड़ कम होते जा रहे हैं। इसलिए कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा कम करने वाली क्रिया भी कमज़ोर पड़ती जा रही है।

वैसे तो कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा बढ़ने का दोहरा असर होता है। जब कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा बढ़ती है, तो ग्रीन हाउस असर की वजह से धरती का तापमान बढ़ जाता है। धरती का तापमान बढ़ने से पेड़-पौधे और जीव-जंतुओं के सांस लेने की दर बढ़ जाती है। सांस लेने की इस प्रक्रिया में कार्बन डाईआक्साइड पैदा होती है। इस कार्बन डाईआक्साइड से ग्रीन हाउस असर पैदा होता है। इस प्रकार यह चक्र या दुष्चक्र चलता रहता है।

धरती का तापमान बढ़ने से ज़्यादा पानी की भाप बनती है। पानी की भाप भी ग्रीन हाउस असर दिखाती है। इसलिए पानी की भाप की मात्रा बढ़ने से







धरती का तापमान बढ़ता है, तापमान बढ़ने से भाप की मात्रा और बढ़ जाती है।

दूसरे शब्दों में ग्रीन हाउस क्रिया के असर ऐसे होते हैं, जिनसे ग्रीन हाउस क्रिया को और बढ़ावा मिलता है। यह एक चक्र है जिसमें चक्र के एक हिस्से में वृद्धि से दूसरे हिस्से में वृद्धि होती है। और फिर दूसरे हिस्से की वृद्धि के कारण पहले हिस्से में और वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार से दोनों हिस्से लगातार बढ़ते जाते हैं।

मीथेन नामक गैस भी ग्रीन हाउस असर पैदा करती है। मीथेन गैस चीज़ों के सड़ने से पैदा होती है। यह कहा जा सकता है कि कार्बन डाईआक्साइड और मीथेन गैसें तो प्राकृतिक क्रियाओं द्वारा पैदा होती हैं। अतः यदि इन प्राकृतिक क्रियाओं का संतुलन बना रहे, तो इन गैसों की मात्रा एक हद से ज़्यादा नहीं बढ़ने पाएगी। यानी जितनी गैस पैदा हो, उतनी का उपयोग भी प्रकृति में हो जाए तो दिक्क़त नहीं होगी। जैसे चीज़ों के जलने और जीव-जंतुओं के सांस लेने से बनी कार्बन डाईआक्साइड का उपयोग पौधे कर लें, तो बात बराबर हो जाएगी। लेकिन जहां संतुलन बिगड़ा और गड़बड़ी हुई।

परंतु कुछ गैसें ऐसी भी हैं जो प्रकृति में अपने आप पैदा नहीं होतीं। पर वे कारखानों और वाहनों से निकलने वाले धुएं में होती हैं। इनमें क्लोरोफ्लोरो कार्बन और नाइट्रस आक्साइड गैसें हैं। क्लोरोफ्लोरो कार्बन को संक्षिप्त में सीएफसी कहते हैं। इन सब बातों की तरफ वैज्ञानिकों का ध्यान है। यह एक अच्छी बात है कि पिछले साल कई देशों ने तय किया है कि वे सीएफसी का उपयोग धीरे-धीरे बंद कर देंगे।

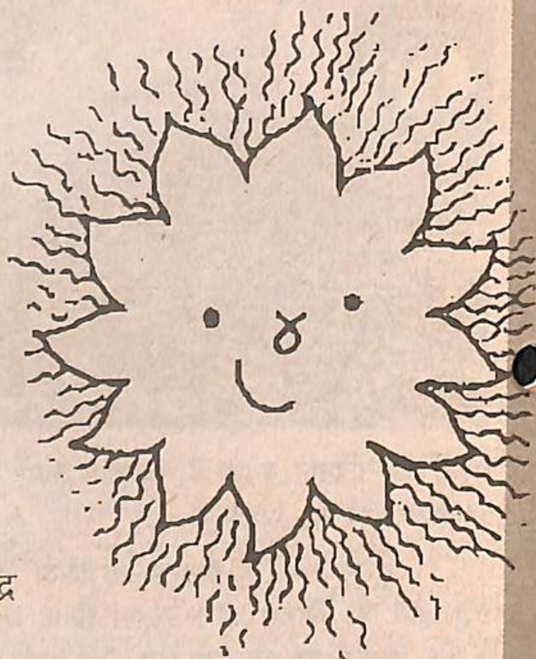
पर सबसे बड़ी दिक्क़त यह है कि हम यानी इंसान ऐसी नई-नई करतूतें करते हैं, जिनसे प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है। कभी हम बेतहाशा पेड़ काटने लगते हैं तो कभी हम खेती में कीटनाशक और रासायनिक खाद का अंधाधुंध प्रयोग करने लगते हैं। और जब बात बिगड़ने लगती है, तो घबराकर उससे बचने की कोई नई तरकीब खोजने लगते हैं। हम बस एक ही काम नहीं करते। और वह है प्रकृति की बनावट को पहचानना और उसके अनुरूप जीना!

❑ **सुशील जोशी**

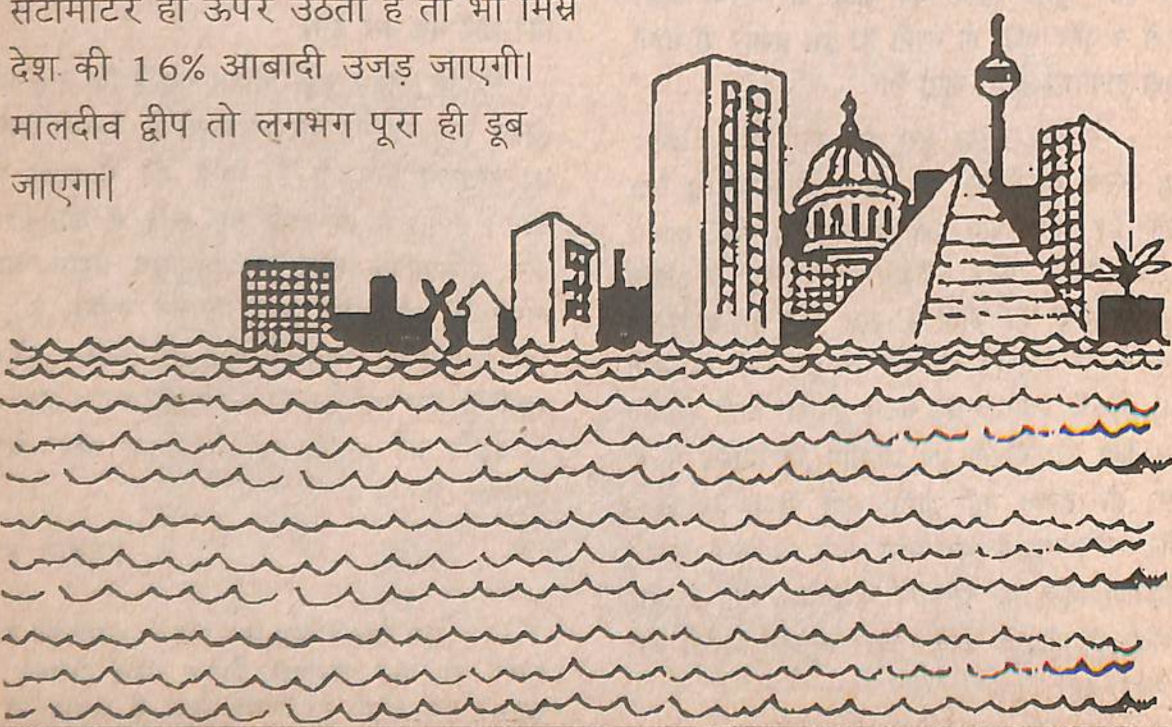
[इस लेख में आए चित्र इंडिया (वाल्टर एवं हैंस); कोडक बुक ऑफ फोटोग्राफी; विलेज इंडिया (स्टीफन पी. ह्यूलर) तथा भारत जन विज्ञान जत्था के स्लाइड शो से साभार]

गर्माती धरती

अगली शताब्दी के मध्य तक यानि 2050 के आसपास पृथ्वी का औसत तापमान डेढ़ से तीन डिग्री सेंटीग्रेड तक बढ़ जाएगा। अगर सचमुच ऐसा हुआ तो पृथ्वी का इतना अधिक औसत तापमान पिछले 12 लाख वर्ष में पहली बार होगा।

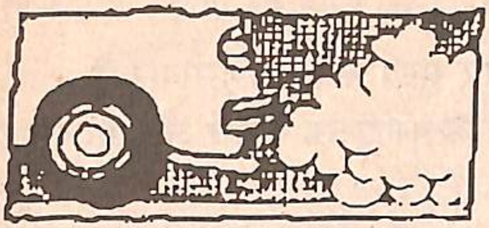


गर्मी से पिघलती बर्फ़ व पानी के फैलाव के कारण समुद्र की सतह सन् 2050 के आसपास 70 सेंटीमीटर तक ऊपर उठ सकती है। इससे समुद्र तट के आसपास के इलाकों में बाढ़ आ जाएगी। उदाहरण के लिए समुद्र की सतह यदि सिर्फ़ 50 सेंटीमीटर ही ऊपर उठती है तो भी मिस्र देश की 16% आबादी उजड़ जाएगी। मालदीव द्वीप तो लगभग पूरा ही डूब जाएगा।



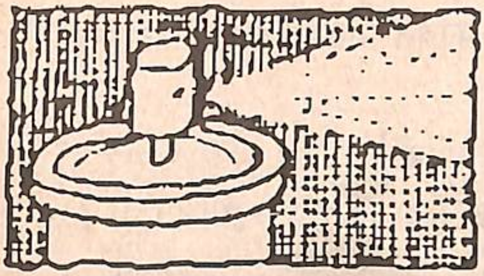


पृथ्वी को गर्माने में मुख्यतः पांच गैसों का हाथ है :



निचली सतह पर ओज़ोन

.... कार आदि के धुएं में बहुत थोड़ी मात्रा में होती है। ग्रीन हाउस प्रभाव में इसका असर लगभग 8% है।



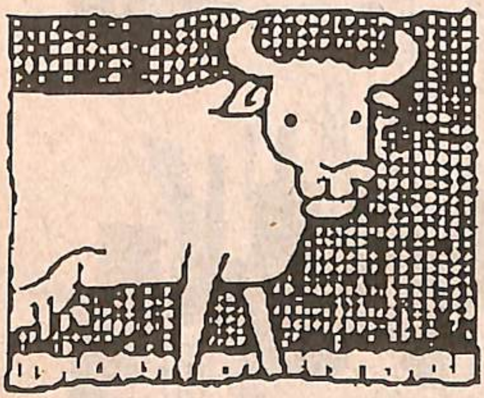
क्लोरो फ्लोरो कार्बन

........फ्रिज, वातानुकूलित मशीनों व स्प्रे आदि से निकलती है। ग्रीन हाउस प्रभाव में इसका लगभग 20% हाथ है।



नाईट्रस आक्साइड

.... जंगलों के कटने से जो वनस्पति ज़मीन पर गिरती है उसके सड़ने से बनती है। यह नाइट्रोजन उर्वरकों से भी निकलती है।



मीथेन

.... ग्रीन हाउस प्रभाव में 16% तक ज़िम्मेदार है। इसकी काफ़ी मात्रा सिचिंत ज़मीन की फसलों, खासकर धान के सड़ने से व गाय, भैंस, सुअर आदि के पेट में पैदा होती है, जो मल के साथ बाहर आती है।



कार्बन डाई आक्साइड

पृथ्वी को ग़र्म करने में 50% ज़िम्मेदार है। यह लकड़ी, पेट्रोल डीजल, गैस आदि के जलाने से पैदा होती है।



कौन कितना ज़िम्मेदार !

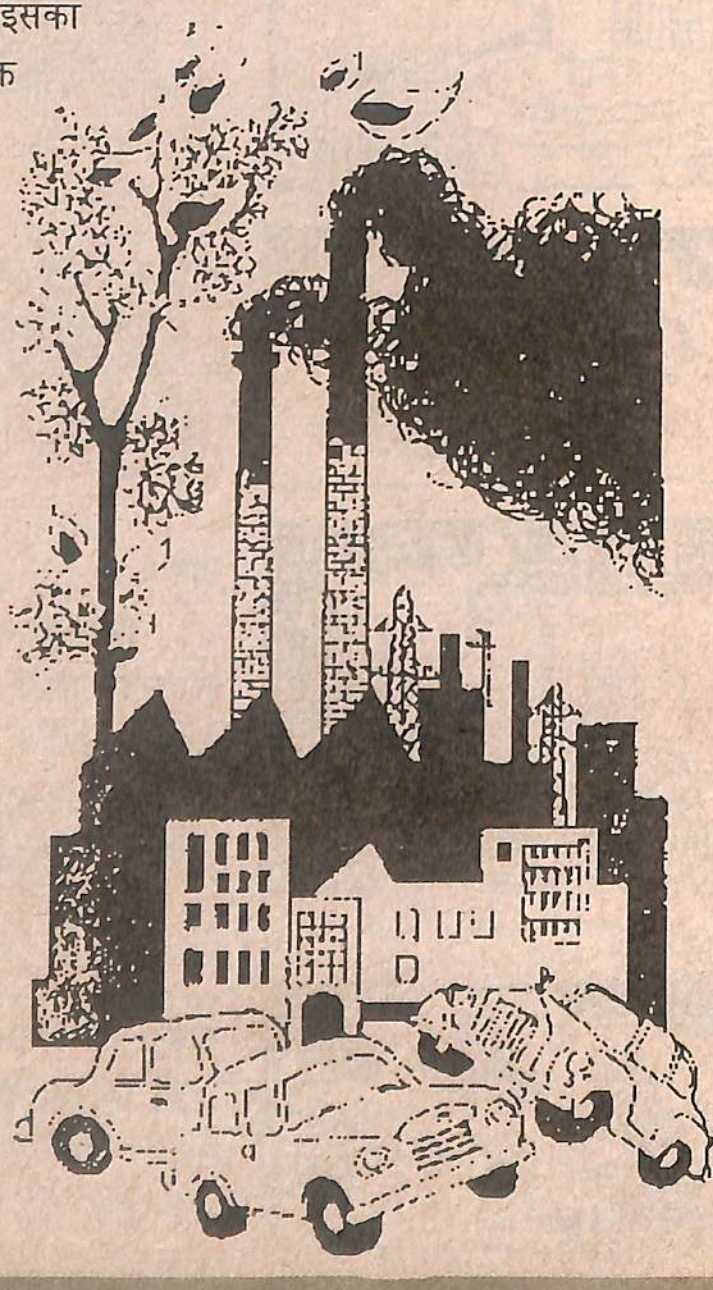
विकसित व अमीर देश ही ग्रीनहाउस प्रभाव के लिए मुख्य रूप से ज़िम्मेदार हैं-

● हवा में छोड़ी जाने वाली कुल कार्बन डाई आक्साइड का 75% हिस्सा और सी एफ सी का 50% हिस्सा विकसित देशों का होता है।

● विकसित देशों का एक व्यक्ति औसतन 3.2 टन कार्बन प्रतिवर्ष हवा में डालता है। जबकि ग़रीब देशों में यह औसत इसका चौथाई है। अमेरिका का एक व्यक्ति औसतन 7 टन कार्बन हवा में डालता है, जबकि भारत का प्रति व्यक्ति औसत 0.7 टन।

● लेकिन सन् 2050 तक ग़रीब देशों का हिस्सा लगभग तीन गुना हो जाएगा। वह इसलिए क्योंकि वे विकास के नाम पर अमीर देशों की ही नकल कर रहें है।

● जंगलों की अंधाधुंध कटाई से पेड़-पौधों द्वारा ली जाने वाली कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा घट रही है। यह मात्रा 1950 की तुलना में 1985 में केवल एक तिहाई रह गई है।





क्या - कर सकते हैं?

ग़रीब देशों के अधिकांश लोग लकड़ी, गोबर या मिट्टी के तेल से खाना पकाते हैं। इनके जलाने से कार्बन डाई आक्साइड पैदा होती है। गाय, भैंस मीथेन पैदा करती हैं। सिंचित खेती से भी मीथेन बढ़ती है। लेकिन इन लोगों के पास विकल्प क्या है? न इनके विकल्पों की किसी को परवाह है।

दूसरी तरफ अमीर लोग ऐशो आराम की ज़िंदगी बसर करते हुए ग़रीब देशों के लोगों से कई गुना अधिक प्रदूषण हवा में डाल रहे हैं।
तो असली ज़िम्मेदार कौन है?

फिर भी ग्रीन हाउस प्रभाव कम करने के लिए यह तो किया ही जा सकता हैः

- उर्जा का सही इस्तेमाल!
- जंगलों की कटाई को रोकना।
- चीज़ों को जलाकर पैदा करने वाली ऊर्जा के बदले, पानी, हवा या सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा का अधिक इस्तेमाल। चाहे वह घर हो या कार!

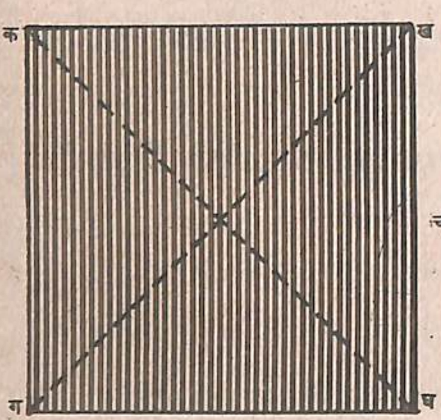


(चित्र तथा सामग्री 'पोप्यूली' पत्रिका से साभार)

खेल कागज़ का

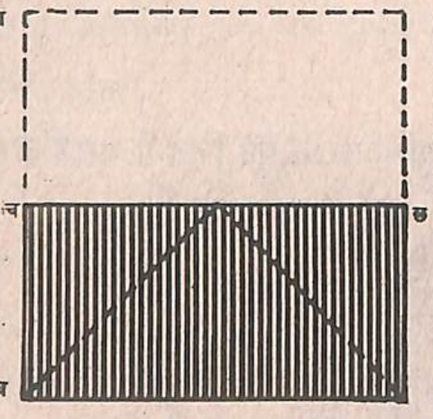
उछलने वाला मेंढक

इस बार तुम उछलने वाला मेढ़क बनाओ। इसे बनाने के लिये पानी आधार का इस्तेमाल किया जाता है। पानी आधार से और भी कई चीज़ें बन सकती हैं।

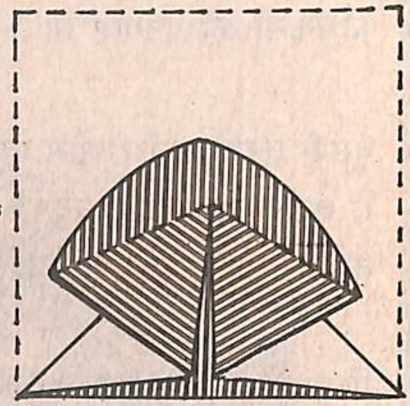


1. एक वर्गाकार कागज़ लो और उसके चारों कोनों को नाम दे दो। हमने समझाने के लिए ऐसा कागज़ लिया है, जिसमें एक तरफ कुछ डिज़ाइन बनी है।

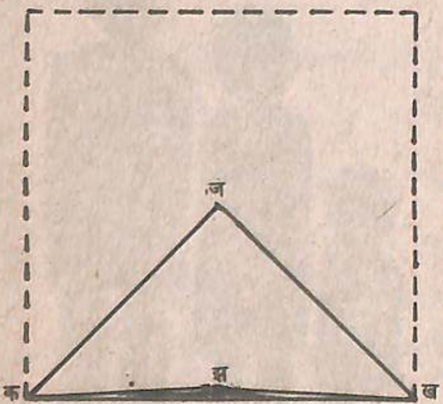
अब **क घ** और **ख ग** सिरों को बारी बारी से मिलाकर दो कर्ण रेखाएं प्राप्त कर लो।



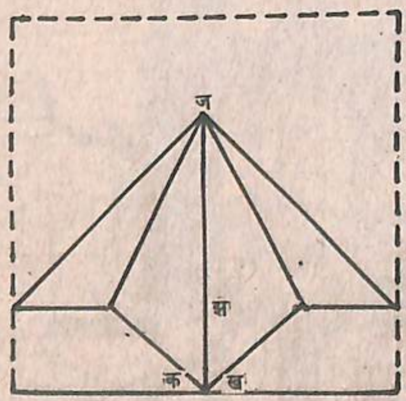
2. कागज़ को पलटो और बीच से मोड़ते हुए **क ख** सिरों को **ग घ** पर लाओ। मोड़ को पक्का कर लो। मोड़ से बनी रेखा को **च छ** नाम दे दो।



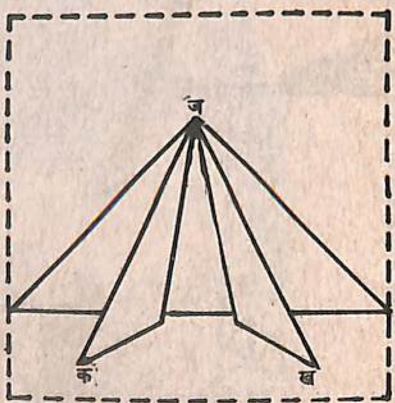
3. इस मोड़ को खोलकर कागज़ को पलट दो। अब **च** और **छ** सिरों को अंदर की तरफ दबाते हुए पास लाओ।



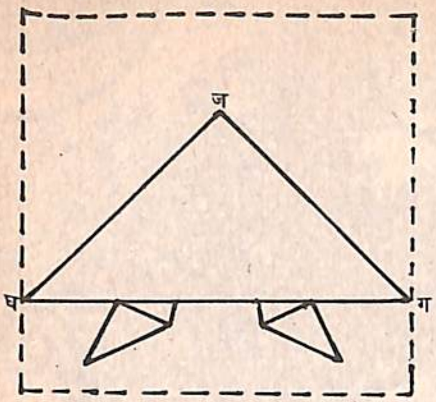
4. ऐसा करने पर तुम्हें चार तह वाली आकृति मिलेगी। इस आकृति को **पानी आधार** कहते हैं। इसे नामांकित कर लो।



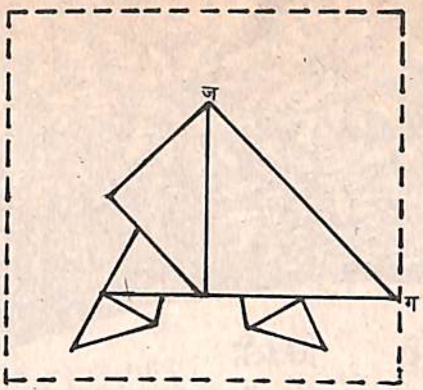
5. अब **ज क** भुजा को खाई मोड़ बनाते हुए **ज झ** रेखा पर लाओ। मोड़ को पक्का कर लो। इसी तरह **ज ख** भुजा को **ज झ** पर लाओ।



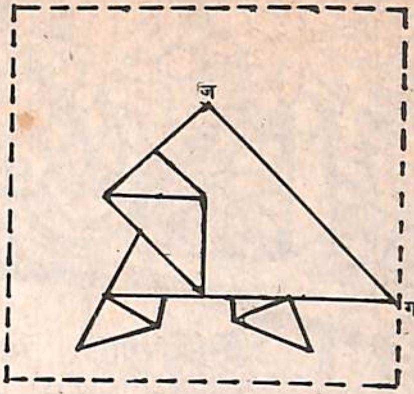
6. अब **ज क** भुजा को खाई मोड़ बनाते हुए वापस बाहर की तरफ मोड़ो। इसी तरह **ज ख** भुजा को भी बाहर की तरफ मोड़ो।



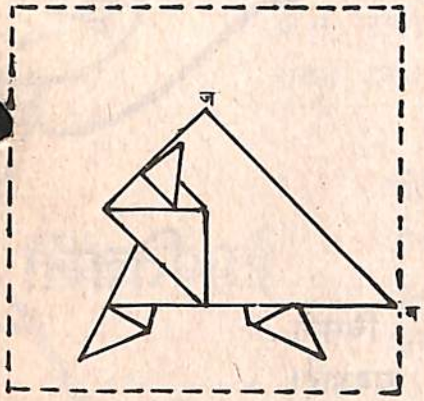
7. अब आकृति को पलट दो।



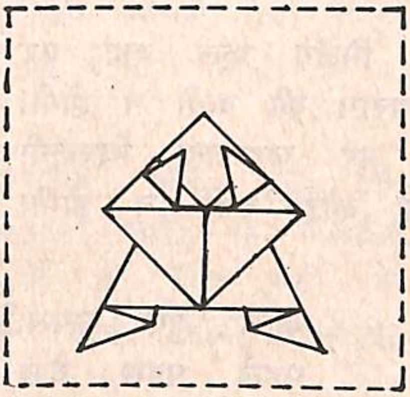
8. अब **घ** सिरे को मोड़कर **ज** पर लाओ।



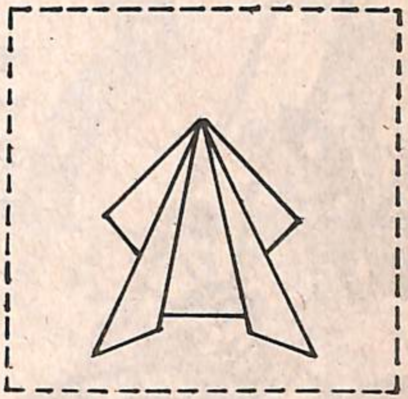
9. **घ** सिरे को बीच से आधा मोड़कर वापस उसी दिशा में ले जाओ।



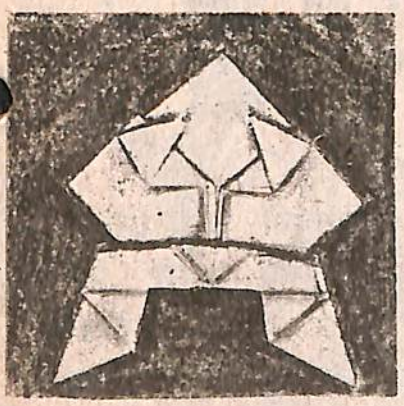
10. एक बार फिर **घ** सिरे को पहाड़ी मोड़ बनाते हुए बीच से थोड़ा ज़्यादा मोड़ते हुए,पीछे की तरफ (यानी, **ज** सिरे की ओर) ले जाओ।

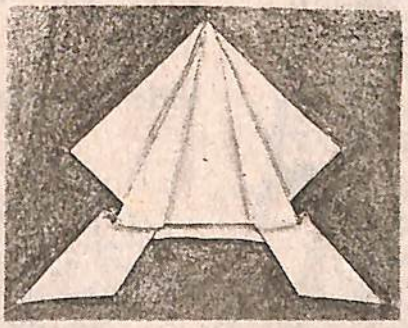


11. इसी तरह **ग** सिरे को भी मोड़ो।

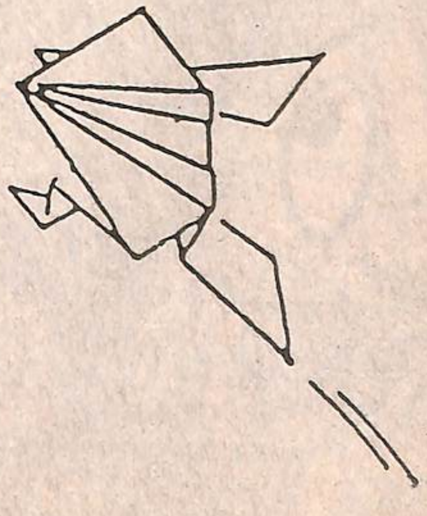


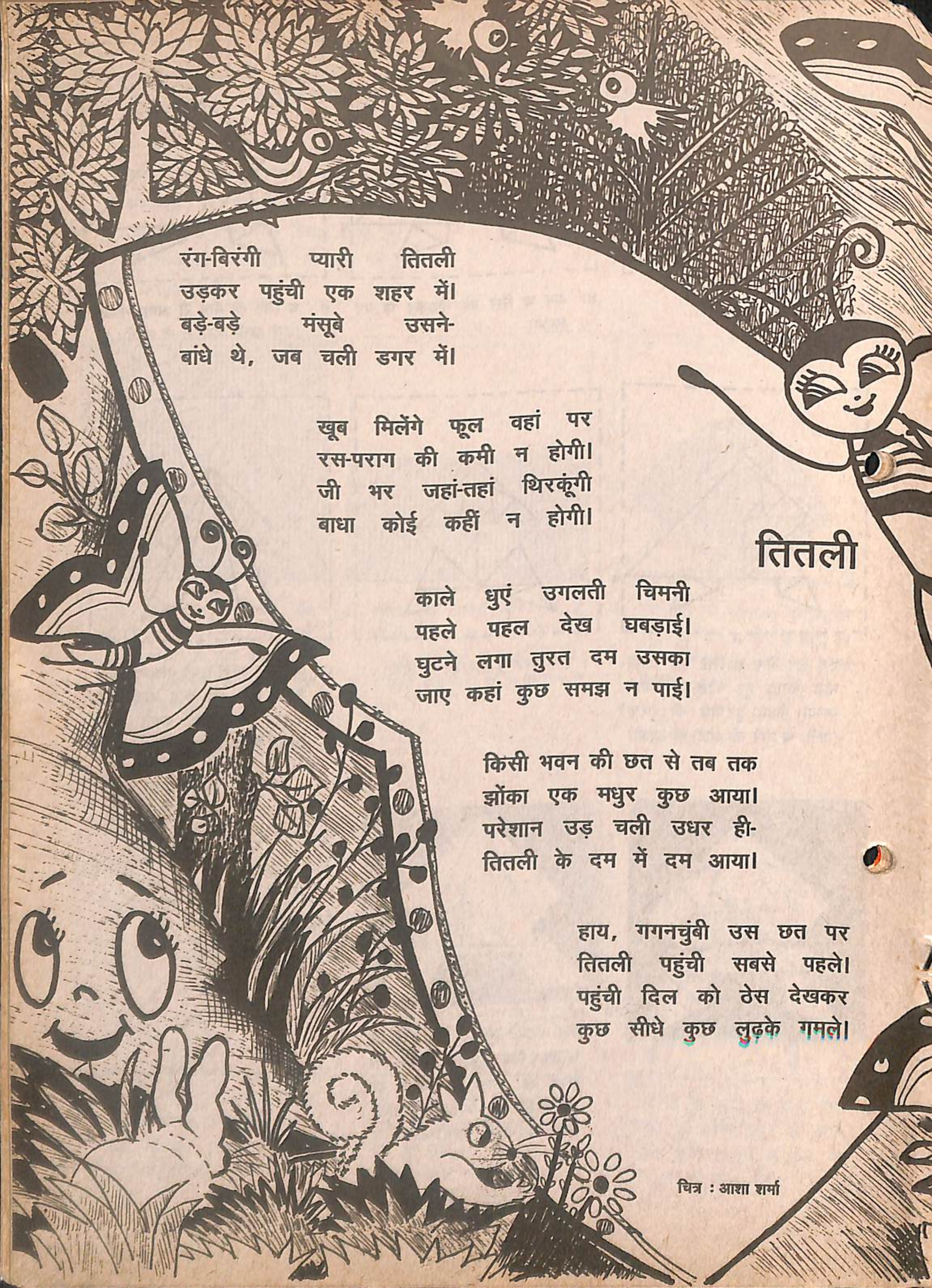
12. अब इस आकृति को पलटकर बीच में दो मोड़ इस तरह डालो जैसे काग़ज़ का पंखा बनाते समय डालते हैं। चित्र देखो।





13. अब आकृति को इस तरह रखो कि उसका सपाट हिस्सा ऊपर की तरफ रहे। उंगली से बीच के उठे हुए हिस्से को थोड़ा-सा दबाकर छोड़ दो। देखो मेंढ़क उछला या नहीं।





तितली

रंग-बिरंगी प्यारी तितली
उड़कर पहुंची एक शहर में।
बड़े-बड़े मंसूबे उसने-
बांधे थे, जब चली डगर में।

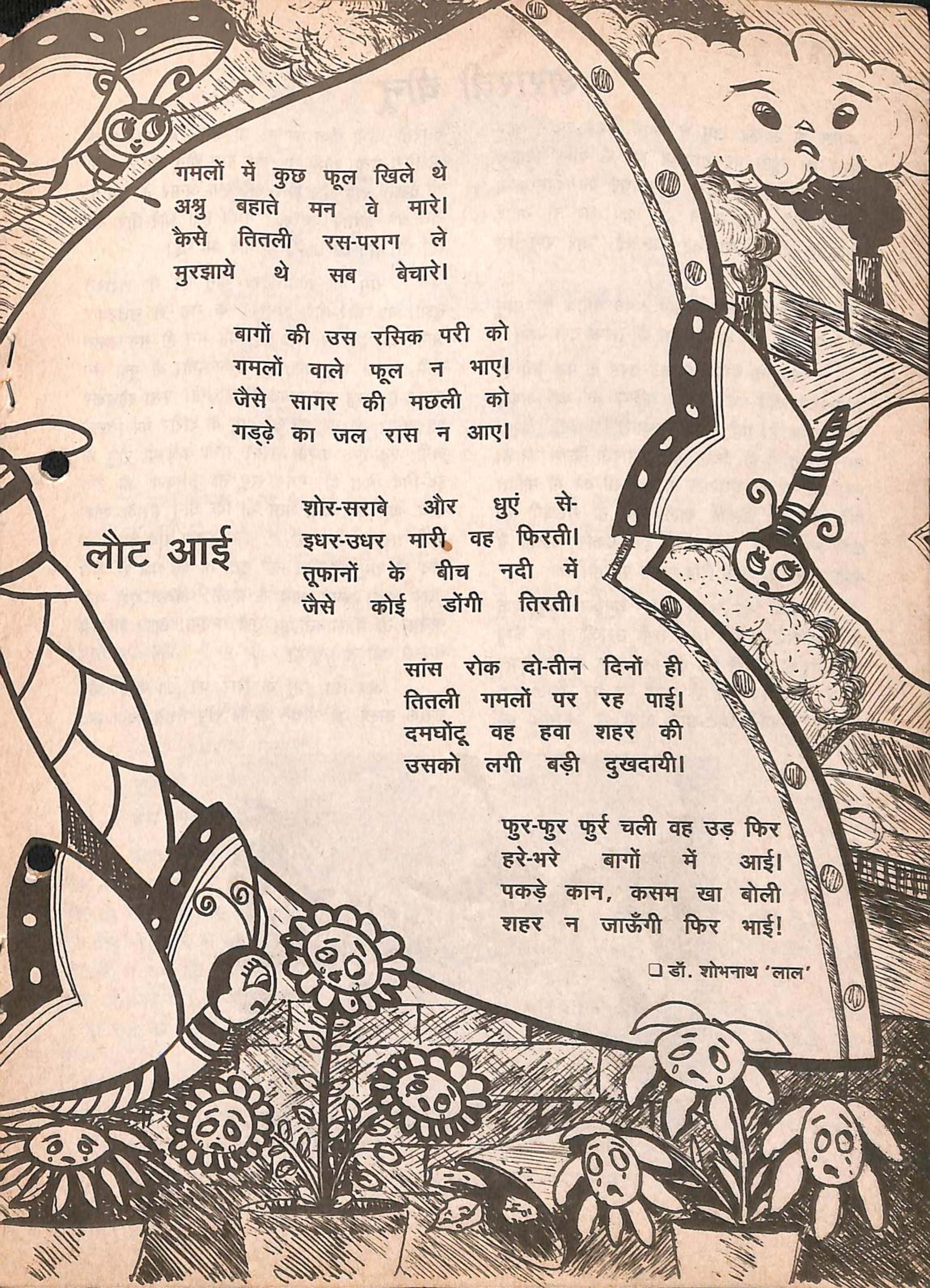
खूब मिलेंगे फूल वहां पर
रस-पराग की कमी न होगी।
जी भर जहां-तहां थिरकूंगी
बाधा कोई कहीं न होगी।

काले धुएं उगलती चिमनी
पहले पहल देख घबड़ाई।
घुटने लगा तुरत दम उसका
जाए कहां कुछ समझ न पाई।

किसी भवन की छत से तब तक
झोंका एक मधुर कुछ आया।
परेशान उड़ चली उधर ही-
तितली के दम में दम आया।

हाय, गगनचुंबी उस छत पर
तितली पहुंची सबसे पहले।
पहुंची दिल को ठेस देखकर
कुछ सीधे कुछ लुढ़के गमले।

चित्र : आशा शर्मा



लौट आई

गमलों में कुछ फूल खिले थे
अश्रु बहाते मन वे मारे।
कैसे तितली रस-पराग ले
मुरझाये थे सब बेचारे।

बागों की उस रसिक परी को
गमलों वाले फूल न भाए।
जैसे सागर की मछली को
गड्ढ़े का जल रास न आए।

शोर-सराबे और धुएं से-
इधर-उधर मारी वह फिरती।
तूफानों के बीच नदी में
जैसे कोई डोंगी तिरती।

सांस रोक दो-तीन दिनों ही
तितली गमलों पर रह पाई।
दमघोंटू वह हवा शहर की
उसको लगी बड़ी दुखदायी।

फुर-फुर फुर्र चली वह उड़ फिर
हरे-भरे बागों में आई।
पकड़े कान, कसम खा बोली
शहर न जाऊँगी फिर भाई!

❑ डॉ. शोभनाथ 'लाल'

शरारती चीनू

स्कूल से आकर रामू ने अपने कपड़े बदले और बस्ते को खूंटी पर टांगकर घर से बाहर निकल पड़ा। रामू की मां उस समय घर का काम-काज निपटा रही थी। उसने रामू को घर से बाहर निकलते देख लिया। वह चिल्लाई, "अरे रामू बेटे कहां जाता है?"

"कहीं नहीं मां, यहीं अपने बगीचे में।" रामू ने कहा और पास वाले बगीचे की तरफ चल पड़ा।

रामू के बगीचे में कई तरह के पेड़-पौधे हैं। छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े और पक्षियों का यहां अंबार लगा रहता है। यहीं रहती है प्यारी गिलहरी "चीनू"। वह स्वभाव से ही चंचल और शरारती किस्म की है। उसके शरीर के घुंघराले बाल किसी को भी मोहित कर लेते हैं। उसकी चाल बड़ी ही मस्तानी है। कभी-कभी मग्न होकर वह इस प्रकार चलती है मानो जंगल के राजा सिंह पधार रहे हों।

थोड़ी देर इधर-उधर घूमकर रामू एक जगह आराम से बैठ गया। तभी उसकी नज़र चीनू पर पड़ी। चीनू कभी पेड़ की इस डाल से उस डाल पर तो कभी एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछल रही थी। कभी अपने छोटे-छोटे दांतों से अमरूद को कुतरती, कभी मौज आ गई तो अनार के सारे फूलों को गिरा देती। थोड़ी देर तक रामू चीनू की शरारतों को देखता रहा और फिर वहीं एक अनार के पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर लेट गया। हवा धीरे-धीरे बह रही थी। रामू को जल्दी ही नींद आ गई।

रामू को सोया देख चीनू को भी शरारत सूझी। वह धीरे-धीरे अमरूद के पेड़ से उतरकर अनार के पेड़ पर चढ़ गई। वह मन ही मन कहने लगी, 'आज रामू को ख़ूब छकाऊंगी। वो मुझे तंग करता है आज उसे सबक सिखाउंगी।' ऐसा सोचकर वह अनार की कलियों को रामू के शरीर पर गिराने लगी। एक-एक करके उसने सभी कलियां रामू के इर्द-गिर्द गिरा दीं, मगर रामू तो कुंभकर्ण की नींद सोया था। उसे क्या पता था कि चीनू उसके साथ कैसी शरारत कर रही है? जब इतना सब करने के बाद भी रामू की नींद नहीं टूटी तो वह पेड़ से नीचे उतर आई। अपने आप से बोली, 'अच्छा ऐसे नहीं मानेगा तो मैं जानती हूं, तुझे मनाना। आज मैं तुझे चैन से नहीं सोने दूंगी।'

अब वह रामू के सिर पर जा बैठी और उसके बालों को नोंचने लगी। रामू हड़बड़ाकर उठ





बैठा। वह आंखें फाड़कर चारो तरफ देखने लगा और काफी भयभीत हो गया। सहमे हुए स्वर में बोला, "कौन था? कौन था जो मेरे बाल खींच रहा था?"

रामू की ऐसी दशा देखकर चीनू बहुत खुश थी और अपनी कामयाबी पर इतरा रही थी। उसने हंसते हुए कहा, "मैं ही थी रामू, डर गए ना? और सुनो रामू!

मैं हूं इस बगिया की रानी
करती हूं हरदम मनमानी
पूछताछ कर ही आना है
वर्ना तुमको पछताना है।

इतना कहकर वह ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी। रामू उसे पकड़ने के लिये दौड़ा मगर वह झट से पेड़ पर चढ़ गई। रामू मन मसोसकर रह गया। वह तो चीनू से पहले से ही नाखुश था और आज की शैतानी से रामू और चिढ़ गया। मगर करता क्या? शाम हो चली थी। वह धीरे-धीरे घर की तरफ जाने लगा। रामू को जाता देख चीनू व्यंग्य के लहजे में बोली,

जल्दी-जल्दी जाओ रामू भैया
तुमसे हैं नाराज़ तुम्हारी मैया।
तेरी दाल यहां पर नहीं गलेगी
बैठो जाकर अपनी राम मड़ैया।

इस व्यंग्य से रामू और जल भुन गया। लेकिन वह कुछ न कर सका। सीधे घर पहुंचा।

अगले दिन की बात है। सुबह देर से उठने के कारण मां ने रामू को डांट पिलाई। फिर जब वह होमवर्क करने बैठा तो उसकी क़लम नहीं मिल रही थी। क़लम मिले तो कैसे? क़लम तो गेंद खेलते समय ही खो दी थी और उसे पता भी नहीं लगा। वह डरते-डरते मां के पास गया और बोला, "मां मेरी क़लम कहीं खो गई है। अब मैं होमवर्क कैसे करूं?"

इतना सुनते ही मां का पारा चढ़ गया। वह गुस्से से बोली, "दिन भर खेलता रहता है। परीक्षा नज़दीक आ गई है, पर पढ़ने को जी नहीं करता कभी इसका। कभी कापी भूल आया, कभी क़लम खो गई। कोई न कोई बहाना ज़रूर रहता है?"

"नहीं मां सच कह रहा हूं, गेंद खेलते समय कहीं गिर गई?" रामू ने कहा।

मां ने रामू को दूसरी क़लम दी। रामू क़लम लेकर होमवर्क पूरा करने के लिये बगीचे में चला आया। वह रास्ते में अपने को कोसता रहा। 'आज काफ़ी देर हो गई। होमवर्क कैसे पूरा होगा?' वह चबूतरे पर आकर बैठ गया और होमवर्क वाली कापी ढूंढ़ने लगा। कापी तो घर पर ही छूट गई थी। वह फिर घर की तरफ दौड़ा कापी लाने।

इधर चीनू को भी मज़ाक सूझा। वह धीरे-धीरे पेड़ से उतरी और रामू की क़लम लेकर चंपत हो गई। जब रामू कापी लेकर आया तो क़लम ग़ायब थी। वह बैचेन हो गया। इधर-उधर क़लम खोजने लगा, 'अभी तो यहीं थी। इतनी ही देर में क़लम कौन ले भागा?'

तभी उसकी नज़र चीनू पर पड़ी। वह रामू की क़लम मुंह में दबाएं हँस रही थी। रामू ने गिड़गिड़ाकर कहा, "मेरी प्यारी चीनू मेरी क़लम दे दो। देखो अभी होमवर्क भी नहीं कर पाया हूं। देर हो रही है।"

चीनू ने सिर हिलाकर कहा, "नहीं मैं नहीं दूंगी। तुम मेरा कहना नहीं मानते हो।"

मेरे आर्डर के बिना यहां कभी मत आना
पढ़ने-लिखने में कभी करना नहीं बहाना।

इतना कहकर वह इधर से उधर भागने लगी। बेचारा रामू उसके पीछे-पीछे दौड़ लगाता रहा। जब रामू दौड़ते-दौड़ते थक गया तो ढेले से चीनू को मारने लगा। मगर सब बेकार। वह एक जगह रुकती ही नहीं थी। कभी इस डाल पर तो कभी उस डाल पर। रामू जब ढेला फैंकते-फैंकते थक गया तो वह चबूतरे के पास चला आया और बैठकर रोने लगा।

रामू को रोता देख चीनू का हृदय पिघल गया। वह ऊपर से जितनी शैतान थी भीतर से उतनी ही अच्छी थी। चीनू उसी चबूतरे वाले पेड़ के पास आई और बोली, "रामू मेरा कहना मानोगे तो मैं तुम्हारी क़लम दे दूंगी।"

रामू ने सहमति से सिर हिला दिया। चीनू ने कहा, "ऐसे नहीं जैसे मैं कहती हूं वैसे करो।"

पकड़ो कान चलाना मत तुम मेरे ऊपर ढेला
कभी कभी मुझे भी भैया दिखला देना मेला

मरता क्या न करता। कान पकड़कर रामू ने अपना अपराध स्वीकार किया। चीनू ने रामू की क़लम नीचे गिरा दी। अब काफ़ी देर हो चुकी थी। रामू ने घड़ी पर नज़र दौड़ाई तो उसका मुंह खुला का खुला रह गया। दस बजने में दस मिनट कम थे। उसने जल्दी से बस्ते को सजाया घर की तरफ भागा। आज उसका होमवर्क पूरा नहीं हो सका था। घर पहुंचकर उसने जल्दी-जल्दी खाना खाया और स्कूल की तरफ भागा।



स्कूल में मास्टर जी ने सभी लड़कों से होमवर्क दिखाने को कहा। रामू ने तो होमवर्क किया ही नहीं था, उसकी ख़ूब पिटाई हुई। स्कूल में आज पढ़ने में उसका मन नहीं लग रहा था। वह सोच रहा था कि चीनू के कारण ही आज उसकी पिटाई हुई है। वह चीनू से बदला लेने के लिए बैचेन हो उठा। दिन भर वह चीनू को फंसाने की तरकीबें सोचता रहा। आख़िर उसने तरकीब सोच ही ली। चीनू को उसने गोंद से फंसाने का विचार किया।

छुट्टी होते ही वह जल्दी-जल्दी घर की तरफ चल पड़ा। घर पहुंचकर बस्ता रखा और गोंद की शीशी लेकर दौड़ पड़ा बगीचे की ओर। बगीचे में पहुंच कर उसने कई पेड़ों से गोंद इकट्ठा किया। चबूतरे के पास आकर उसने अनार के पेड़ के तने में गोंद लगा दिया। इसके बाद वह उसी चबूतरे के पास बैठ गया। उसे विश्वास था कि उसे बैठा देखकर चीनू उसके पास ज़रूर आएगी। वह मन ही मन खुश था कि, 'आज चीनू रानी ज़रूर फंसेगी और उसकी शैतानी का ऐसा मज़ा चखाऊंगा कि छटी का दूध याद आ जाएगा। दिन में ही तारे दिखने लगेंगे उसे।' थोड़ी देर तक रामू यही सोचता रहा। तभी उसकी नज़र चीनू पर पड़ी, वह इधर ही आ रही थी। मगर यह क्या? अनार के पेड़ पर आकर वह रूक गई, नीचे नहीं उतरी। वह वहीं एक डाल पर बैठकर हँसने लगी। रामू ने मन ही मन सोचा, 'हँसने का मज़ा एक मिनट में मिल जाएगा, ज़रा नीचे तो उतरो।'

मगर चीनू तो वहीं पर बैठी अब तक हँस रही थी। नीचे नहीं उतरी। वह हँसते हुए बोली,

मुझे फंसाने के लिये ले आए हो गोंद लासा
मगर बहुत कमज़ोर है भैया तेरा पासा।

यह सुनकर रामू बहुत लज्जित हुआ। वह कुछ न बोला। मगर थोड़ी देर बात चीनू फिर बोली, "पछताओ मत रामू। मैं तुम्हारी दुश्मन थोड़े ही हूं जो मुझे फंसा रहे थे।"

इतना सुनते ही रामू बोला, "मुझे क्षमा कर दो चीनू। स्कूल में पिटाई होने के कारण मैं तुम्हारा अहित सोच बैठा था।"

इतना कह कर रामू जाने लगा। चीनू बोली, "ऐसे नहीं जाओ रामू। आज तुम दुखी हो। दो-चार पके अमरूद तो खाते जाओ।"

इतना कहकर चीनू जल्दी से अमरूद के पेड़ पर पहुंची और चार-पांच अमरूद नीचे गिरा दिए। फिर रामू और चीनू ने मिलकर पेट भर अमरूद खाए।

❑ **सुनील श्रीवास्तव**
पंद्रह वर्ष, बगैन, भोजपुर, बिहार

सभी चित्र : आशीष रानडे





क्यों..क्यों..19

इस अंक में तुमने लू के बारे में पढ़ा ही होगा। लू से बचने के लिए तरह-तरह के उपाय किए जाते हैं। ऐसा ही एक उपाय होता है प्याज को जेब में रखकर घूमना। कुछ लोग कांख में दबाकर भी रखते हैं। कहते हैं ऐसा करने से लू नहीं लगती। बचपन में हमने भी किया। अब हमें तो याद नहीं पड़ता कि लू लगी थी या नहीं।

तुम्हारा क्या ख़्याल है? क्या सचमुच प्याज जेब में रखने से लू नहीं लगती? ऐसा क्या करती है प्याज कि लू न लगे? पता करो। अपने बड़ों-बूढ़ों से पूछो! तुम्हारे उत्तर हमें 15 जून, 1992 तक मिल जाने चाहिए।

क्यों..क्यों..14 का निष्कर्ष

क्यों..क्यों..14 में हमने पूछा था कि कोई भी सवाल पूछने पर सच बात क्यों नहीं बनाई जाती? क्यों बेवजह का डर हमारे मन में बिठा दिया जाता है? क्या यह ठीक है?

इस सवाल के उत्तर में हमें जो पत्र प्राप्त हुए हैं, उन सबमें यही लिखा है कि चूंकि कई बार हमारे माता-पिता को भी सही बात मालूम नहीं होती है। कभी-कभी उनके मन में यह डर भी रहता है कि उनके बच्चे का कुछ अनिष्ट न हो जाए, इसीलिए वे उसे किसी काम को करने से रोकने के लिए कुछ उल्टी-सीधी बातें कर देते हैं, जिनका न कोई सिर होता है न पैर! ख़ैर.. हम इसी अंक में इन्हीं बातों पर आधारित गिजुभाई का एक लेख दे रहे हैं। तुम भी पढ़ो और अपने माता-पिता को भी पढ़वाओ।

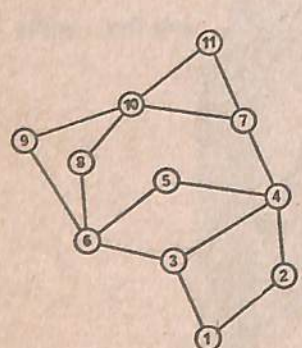
ध्यान रहे यह ज़रूरी नहीं है कि हर पुरानी प्रथा, परंपरा या रीतिरिवाज़ दकियानूसी ही हो, उसके पीछे कोई तार्किक आधार भी हो सकता है। आधार एक या एक से अधिक भी हो सकते हैं। पर यह भी आवश्यक नहीं है कि हर परंपरा या प्रथा के पीछे आधार होगा ही।

इन पाठकों ने जवाब भेजे-

दुर्गेश बिल्लौरे, हरदा। लखन गामड़, करवड़, झाबुआ। आशीष दलाल, खरगोन। विजय कुमार देदड़, तजपुरा, होशंगाबाद। प्रणोद बोकिल, सोंडवा, झाबुआ। कु. शारदा ध्रुव, फरहदा। दीपक कुमार शर्मा, अमोरा, बिलासपुर। लीलाधर, मुरा, रायगढ़। बलीराम शर्मा, नाहरकोला, सिवनी मालवा। सत्येंद्रसिंह रघुवंशी, हरदा। सुरेश चंद्र रावत, लहर्रा, मुरैना। **सभी म.प्र.।** मनमोहन चौधरी, देसूरी, पाली, **राजस्थान**। सियाराम, पूरे जालिम का पुरवा फ़ैज़ाबाद, **उ.प्र.।**

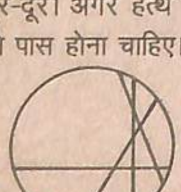
माथापच्ची : उत्तर मार्च अंक के

1.

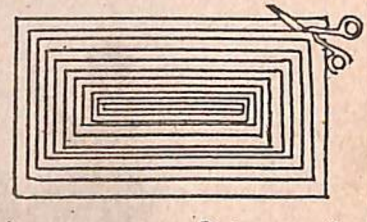


2. कैंची के हत्थे पास-पास हैं, लेकिन धार वाले हिस्से दूर-दूर। अगर हत्थे पास-पास हैं तो धारवाले हिस्सों को भी पास होना चाहिए।

3.



4. तुम खुद ही काट देखो। इस चित्र में बताए तरीक़े से-



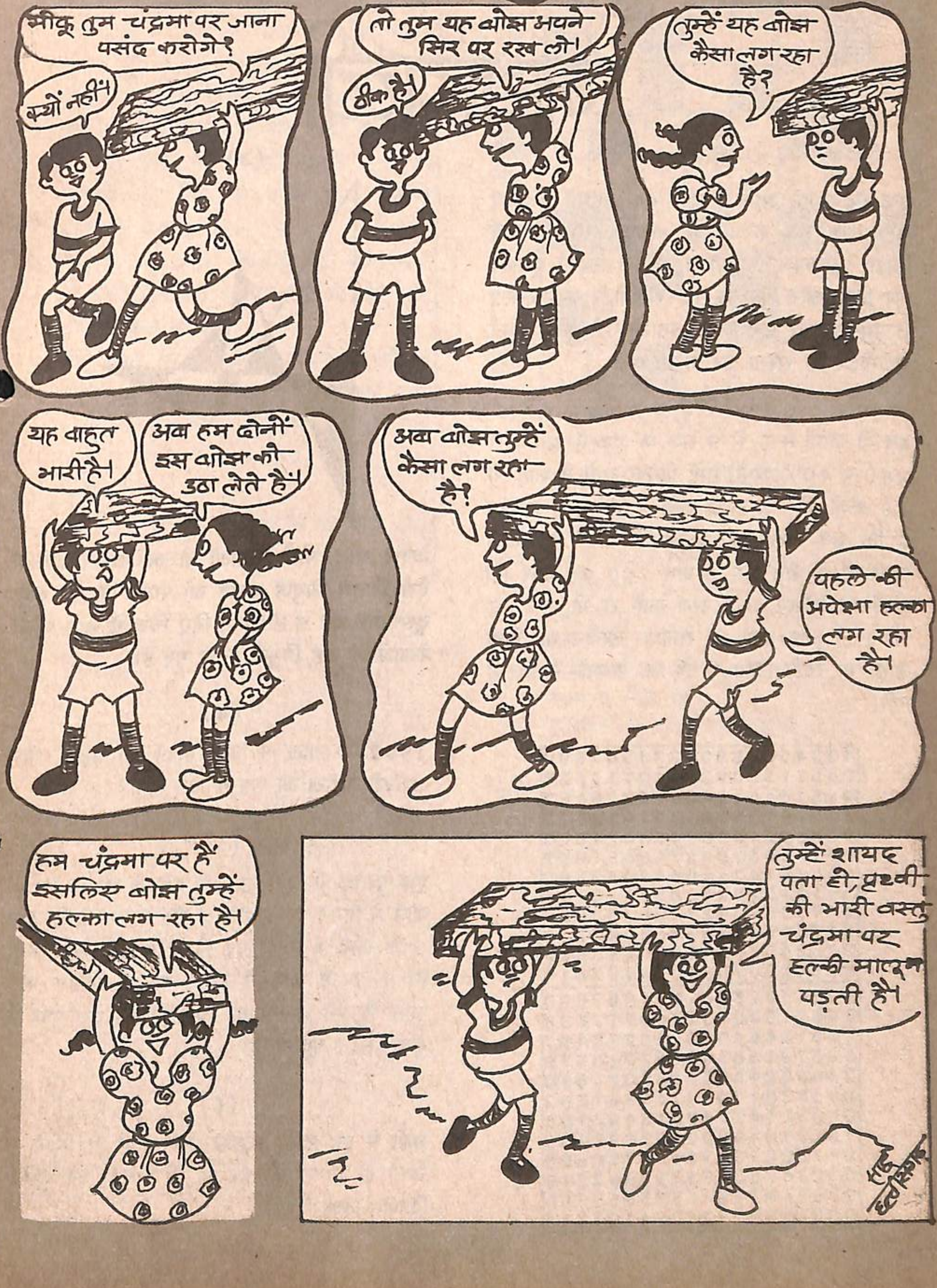
सोचकर जवाब दो के हल : 1. दिसंबर-जनवरी। 2. गढ्ढा ख़ाली होगा। 3. चार, 4. तीन, 5. पांच, 6. रोमन अंक लिपि में, XIX=19 होता है। अगर इसमें से बीच का I हटा तो शेष XX=20 रह जाता है।

वर्ग पहेली 11 का हल



बिंदु

• साहू


मीकू तुम चंद्रमा पर जाना पसंद करोगे?
क्यों नहीं!
तो तुम यह बोझ अपने सिर पर रख लो।
ठीक है!
तुम्हें यह बोझ कैसा लग रहा है?
यह बहुत भारी है।
अब हम दोनों इस बोझ को उठा लेते हैं।
अब बोझ तुम्हें कैसा लग रहा है?
पहले की अपेक्षा हल्का लग रहा है।
हम चंद्रमा पर हैं इसलिए बोझ तुम्हें हल्का लग रहा है।
तुम्हें शायद पता हो, पृथ्वी की भारी वस्तु चंद्रमा पर हल्की मालूम पड़ती है।



माथापच्ची

(1)

एक मेंढ़क को अपने शिकार तक पहुंचने के लिए जो रास्ता तय करना था, उसने उसका चौथाई हिस्सा फुदककर तय किया, तीसरा हिस्सा कूदकर पार किया और अंत का 10 सेंटीमीटर का फासला छलांग लगाकर पार किया। बताओ उसे कुल कितने सेंटीमीटर का रास्ता पार करना था?

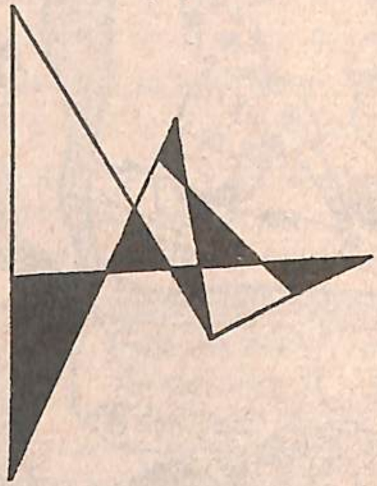
(2)

इन दो खानों में 0 से 9 तक के अंक हैं। प्रत्येक में 240–240 अंक हैं। तुम्हें प्रत्येक खाने में कोई भी 40 अंकों को एक सीधी रेखा में इस तरह जोड़ना है कि उन अंकों को जोड़ने से प्राप्त होने वाले योगफलों के बीच कम से कम 200 का अंतर हो। अंकों को जोड़ने वाली रेखा कहीं से भी शुरू कर सकते हो और कहीं भी समाप्त। लेकिन यह रेखा आड़ी या खड़ी दिशा में ही जा सकती है तिरछी नहीं।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	0
2	4	5	7	1	5	3	0	9	3	2	1	4	3	2	1	7	5	3	8
4	8	5	1	8	4	6	4	6	4	0	9	1	5	2	7	6	4	6	7
1	3	5	7	9	1	3	5	7	9	1	3	5	7	9	1	3	5	7	9
2	4	6	8	0	2	4	6	8	0	2	4	6	8	0	2	4	6	8	0
0	9	1	8	3	8	4	7	5	6	3	7	4	6	5	5	1	0	9	2
0	0	0	8	8	1	4	2	7	4	0	6	1	8	4	5	7	7	8	0
1	9	1	9	1	9	1	9	2	8	2	8	3	7	3	7	3	7	3	6
6	4	7	5	8	6	7	3	4	2	4	1	0	5	7	5	6	6	6	6
0	1	2	3	4	5	3	3	3	3	3	7	6	8	9	4	2	2	1	9
9	7	6	5	4	3	2	1	5	4	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5
0	8	6	4	2	0	9	7	5	3	1	0	7	4	1	0	7	4	1	4

1	2	3	4	5	6	7	8	9	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	0
2	4	5	7	1	5	3	0	9	3	2	1	4	3	2	1	7	5	3	8
4	8	5	1	8	4	6	4	6	4	0	9	1	5	2	7	6	4	6	7
1	3	5	7	9	1	3	5	7	9	1	3	5	7	9	1	3	5	7	9
2	4	6	8	0	2	4	6	8	0	2	4	6	8	0	2	4	6	8	0
0	9	1	8	3	8	4	7	5	6	3	7	4	6	5	5	1	0	9	2
0	0	0	8	8	1	4	2	7	4	0	6	1	8	4	5	7	7	8	0
1	9	1	9	1	9	1	9	2	8	2	8	3	7	3	7	3	7	3	6
6	4	7	5	8	6	7	3	4	2	4	1	0	5	7	5	6	6	6	6
0	1	2	3	4	5	3	3	3	3	3	7	6	8	9	4	2	2	1	9
9	7	6	5	4	3	2	1	5	4	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5
0	8	6	4	2	0	9	7	5	3	1	0	7	4	1	0	7	4	1	4

(3)



केवल सात सीधी रेखाओं से अधिक से अधिक ऐसे कितने त्रिभुज बनाए जा सकते हैं जो एक-दूसरे पर चढ़े न हों। यहां दिए चित्र में सात सीधी रेखाओं से छह त्रिभुज बनाए गए हैं।

(4)

1992 के साल में किस महीने की पहली और आख़िरी तारीख़ को एक ही दिन होगा?

(5)

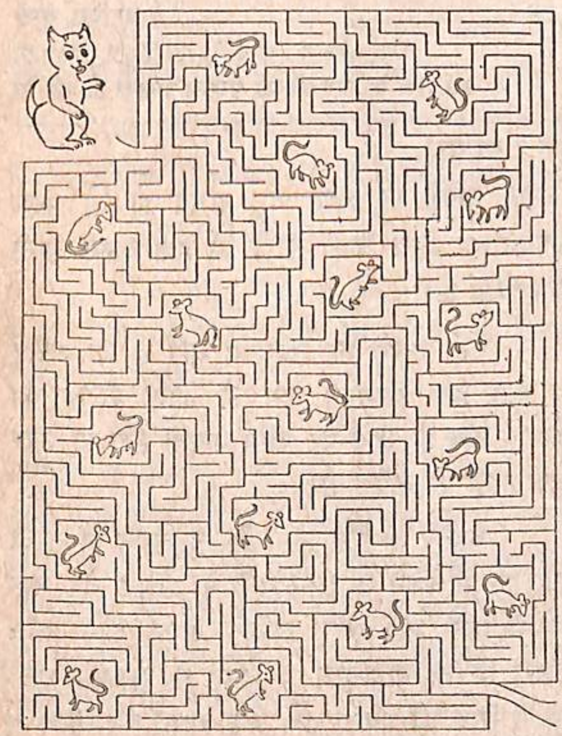
एक पुस्तक के एक पृष्ठ की पंक्तियों को 3–3 के जोड़े में गिनने पर 2 पंक्तियां शेष रह जाती हैं। 5–5 के जोड़े में गिनने पर भी 2 पंक्तियां शेष रहती हैं। 7–7 के जोड़े में गिनने पर 5 पंक्तियां शेष रहती हैं। हम जानना यह चाहते हैं कि उस पृष्ठ में कुल कितनी पंक्तियां हैं!

(6)

घड़ी में वह समय बताओ जब उतने ही बजने में उतने ही मिनट की देर हो और घड़ी की सुइयां विपरीत दिशा में हों।

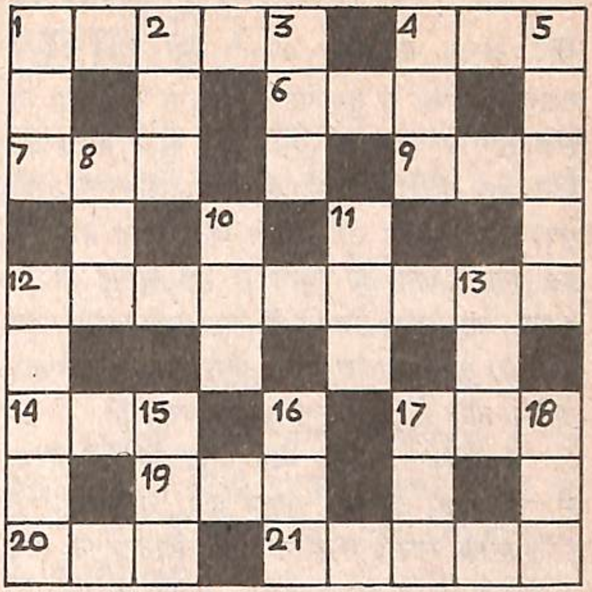
सोचकर जबाव दो

1. **दस** साल पुराने एक पेड़ के तने पर ज़मीन से तीन मीटर की ऊंचाई पर एक कील गाड़ दी जाती है। पेड़ हर साल 10 सेंटीमीटर बढ़ता है। बताओ तीन साल बाद कील की ज़मीन से ऊंचाई कितनी हो जाएगी?
2. **एक** बकरी एक पेड़ के नीचे खड़ी है। उसके गले में पांच मीटर लंबी रस्सी बंधी है। बताओ वह पेड़ के चारों तरफ कितने अर्धव्यास तक घूम सकती है?
3. **एक** सामान्य छतरी के नीचे आठ लोग खड़े हैं, लेकिन मजाल है कि कोई भी भीग रहा हो। यह कैसे संभव है?
4. **मंजू** शक्कर का एक थैला घर ले जा रही है। गंजू पांच थैले ले जा रहा है। सभी थैले समान आकार के हैं, फिर भी मंजू का थैला गंजू के थैलों से तीस गुना भारी है। ऐसा क्यों?
5. **पांच** आम हैं, तुमने उसमें से दो उठा लिए तो तुम्हारे पास कितने रहे?



बिल्ली, इन चूहों को खाना चाहती है, पर उसे रास्ता नहीं मिल रहा! मदद करोगे?

वर्ग पहेली-12



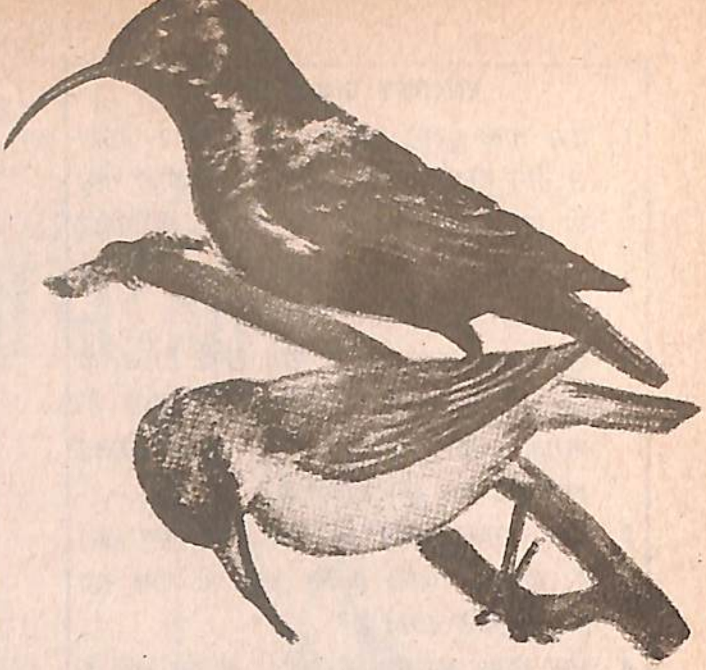
संकेत : बाएं से दाएं

1. हमदर्दी (5)
4. हरी कच्च नाशपाती में रोटी भी है (3)
6. कविता, उर्दू में (3)
7. बरतन बनाने वाला (3)
9. अर्थ तो आंख है लेकिन उल्टी तरफ से पढ़ने पर (3)
12. जनकवि कबीर के एक दोहे की पंक्ति (2, 2, 4, 1)
14. गाय हमें जो चीज़ें देती है, उनमें से एक (3)
17. संकोच (3)
19. रियासत की हद में नदी भी है (3)
20. चिंतन का साथी (3)
21. वे जिनके लिए इशारा, ही काफ़ी होता है (5)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. धुन कहो, चाहे पागलपन (3)
2. वह सफ़ेद धातु जिससे आभूषण बनते हैं (3)
3. डूबते को इसका सहारा ही मिल जाए तो बहुत (3)
4. परचम न लहरा सको, तो बगीचा ही ढूंढ लो (3)
5. ......मथुरा न्यारी, एक कहावत का अंश (2, 2, 1)
8. सुरक्षा (3)
10. मही या मठे में पकाए गए चावल का व्यंजन (3)
11. हर बारह साल में भरने वाला एक धार्मिक मेला (3)
12. गोलमाल दाम में भंडारघर (5)
13. कुएं से पानी निकालने का एक यंत्र (3)
15. घर (3)
16. प्रयत्नपूर्वक (3)
17. जिसे बूझा न जा सके (3)
18. सिरकटा रावण तलवार रखता है (3)

शकरखोरा



यदि जीवन का पूरा आनंद लेने वाले किसी मस्तमौला पक्षी से तुम पहचान करना चाहते हो तो शकरखोरे से मिलकर तुम्हें ज़रूर खुशी होगी। यह दिन भर सीटी बजाता हुआ, एक फूल से दूसरे फूल तक उड़कर उनका रस पीता रहता है। मानो इसे किसी बात की चिंता न हो। जंगल हो या शहर, जहां फूल खिलते हैं, वहां शकरखोरे पहुंच जाते हैं। गुड़हल और सेमल जैसे फूल, जिनमें रस अधिक होता है, इसे बहुत अधिक पसंद हैं।

आकार में यह पक्षी छोटा होता है-गौरेया से भी छोटा। नर और मादा प्रायः साथ रहते हैं किंतु इनके रंगरूप में इतना अंतर होता है कि ऐसा लगता है कि ये अलग-अलग जातियों के पक्षी हैं। मादा के शरीर का निचला भाग हल्के पीले रंग का होता है और ऊपरी भाग हल्का कत्थई। नर का रंग प्रजनन काल में गहरा होता है, जैसा यहां चित्र में दिखाया गया है। इस पर चमकीले, काले, नीले, हरे रंगों की छटा दिखाई पड़ती है मानो सूर्य से किरणें फूट रही हों। इसी कारण अंग्रेज़ी में इसे **'सनबर्ड'** यानी सूर्य पक्षी कहते हैं। किंतु प्रजनन काल के बाद नर का रंग बहुत कुछ मादा के रंग के समान हो जाता है।

शकरखोरे की चोंच लंबी, पतली और मुड़ी हुई होती है। इसकी सहायता से यह फूलों का रस आसानी से पी सकता है। फूलों का रस पीते समय शकरखोरे एक फूल के परागकणों को दूसरे फूल के स्त्रीकेसर तक पहुंचा देते हैं। इस क्रिया को परागण कहते हैं और फल बनने के लिए इसका होना आवश्यक होता है। फूलों का रस पीने के अलावा शकरखोरे छोटे कीड़ों और मकड़ियों को भी खाते हैं। फूलों पर मंडराते समय ये पक्षी चिप-चिप आवाज़ करते रहते हैं जो सुनने में बड़ी मधुर लगती है।

शकरखोरा का प्रजनन काल वैसे तो पूरे साल भर चलता है किंतु मुख्य रूप से यह मार्च से मई तक होता है। तिनकों और मकड़ी के जालों से बना हुआ घोंसला बटुए के आकार का होता है और किसी पेड़ की शाखा से लटका रहता है। इसकी दीवाल में एक छेद होता है जिसका उपयोग नर और मादा घोंसले में आने-जाने के लिए करते हैं। मादा 2 या 3 अंडे देती है। घोंसला बनाने और अंडों को सेने का काम मादा ही करती है। नर केवल बच्चों के लिए भोजन जुटाने में सहायता देता है।

❑ अरविंद गुप्ते

(चित्र सौजन्य : बॉम्बे नेचुरल हिंस्ट्री सोसायटी)

इस लेख के साथ ही यह श्रृंखला समाप्त हो रही है।

(पृष्ठ 7 का शेष)

में भीगे कपड़े से लपेट दो। संभव हो तो पंखा चलाकर या अन्य किसी तरीक़े से हवा करके पानी को वाष्पित करो।

ऐसा करने का उद्‌देश्य यही है कि शरीर का बढ़ा हुआ तापमान कम हो जाए। शरीर का तापमान कम हो जाने पर भीगा कपड़ा हटा दो और सूखे कपड़े को लपेट दो।

बेहतर तो यही होगा कि लू लगने ही न दी जाए। लू से बचने के लिए गर्मी में अधिक देर तक धूप में काम मत करो। लेकिन अगर काम बहुत ज़रूरी हो तो बीच-बीच में छाया में सुस्ताते रहो। धूप में सिर को हमेशा ढक कर रखो। बीच-बीच में पानी भी काफ़ी मात्रा में पीते रहो।

❑❑❑

मां-बाप

बेवजह, क्यों डराते हैं?

मां रोज़ कहा करती, 'बेटे! तुम मेरी सुनते नहीं हो, तो तुम किसी दिन मर जाओगे।'

लेकिन लड़का तो उल्टी खोपड़ी का था। वह रोज नई-नई तरक़ीबें निकालता। नए सवाल खड़े करता। किसी से डरना तो वह जानता ही नहीं था। वह समूचे गांव को हैरान और परेशान करता रहता था।

गांव से कुछ दूर एक तालाब था। मां रोज़ कहती, 'बेटे! तालाब पर मत जाना। अगर तुमने मेरी बात न सुनी, तो तालाब में रहने वाला मगर तुमको खा जाएगा। वहां एक बहुत बड़ा मगर रहता है।'

लेकिन लड़का ऐसी बातों से डरने वाला था नहीं। जबाव में वह कहता, 'मां! चलो, तुम मुझ को दिखलाओ कि मगर कैसा है!'

एक दिन लड़का बोला, 'मां! मुझको थोड़ा पानी पिला दो ना!'

मां ने कहा, 'पानी तुम अपने हाथों से पी लो। क्या तुम्हारे हाथ-पैर टूट गए हैं?'

इस पर लड़का बोला, 'तो मां, सुनो! मैं यह चला। तालाब पर जाकर वहीं पानी पी लूंगा।'

लड़का चल दिया।

मां ने कहा, 'बेटे, ओ बेटे,' मेरी सुनो। लौट पड़ो। लौटो, लौटो! तुम मेरी बात सुनते नहीं हो। तुम बेमौत मर जाओगे।'

लड़का तो मगर को देखना चाहता था। तालाब के किनारे पहुंच कर जैसे ही उसने पानी पीना शुरू किया, मगर ने अपना मुंह बाहर निकाला और लड़के की टांग पकड़ ली। लड़के की क्या ताक़त थी कि वह अपनी टांग छुड़ा लेता? मगर ने लड़के को निगल लिया। मां दूर खड़ी-खड़ी देखती रही। भला, वह मगर के पास कैसे जाती?

मां रोने और बिलखने लगी। अड़ोस-पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गए। सब कहने लगे, 'तुमने अपने लड़के को रोका क्यों नहीं? वहां उसकी ऐसी क्या चीज़ गड़ी थी कि तुमने उसको वहां जाने दिया?'

मां बोली, 'अरे भैया! अपनी तरफ से तो मैंने उसको बहुत मना किया। कहते-कहते मेरी तो जीभ सूखने लगी। लेकिन उसने मेरी एक न सुनी।'

पड़ोसी कहने लगे,'हां आजकल के ये लड़के कुछ ऐसे ही हो गए हैं। ये अपने मां-बाप की बात तो सुनते ही नहीं हैं। फिर इनकी ऐसी हालत न हो, तो और क्या हो?'

लड़का मगर के पेट में पहुंचा। लेकिन वह कच्चा-पोचा तो था नहीं। वह तो अपनी कमर में छुरी रख कर गया था। छुरी से मगर का पेट चीर कर वह बाहर निकल आया, और दौड़ता-दौड़ता घर पहुंचकर मां से कहने लगा, 'मां! तुम तो कहतीं थीं कि मैं तुम्हारी बात नहीं मानूंगा, तो मर जाऊंगा!'

यह अफ्रीका में प्रचलित एक कहानी है। कहानी बिलकुल झूठी है। लेकिन उसमें एक रहस्य है। हम अपने परिवारों के कुछ उदाहरण लें। लड़का कहता है, 'मां! मुझको इस निसैनी पर चढ़ना है।' मां कहती है, 'नहीं, मत चढ़ो।' लड़का मां की बात नहीं मानता, और निसैनी पर चढ़ने लगता है। मां कहती, 'बेटे! सुनो, तुम गिर पड़ोगे।' लड़का निसैनी पर चढ़कर फिर नीचे उतर आता है, और अपनी मां से कहता है, 'मां! तुम तो कहतीं थीं, कि मैं गिर पडूंगा। लेकिन मैं गिरा तो नहीं!'

नन्हा-सा बालक पूछता है, 'मां! मैं पटिया ले आऊं! दूध की बोतल ले आऊं! अमुक चीज़ ले आऊं? तमुक चीज़ ले आऊं?' मां कहती, 'नहीं मत लाओ। तुम्हारे हाथ से गिर पड़ेगी।' बालक कहता, 'नहीं, मैं तो लाऊंगा।' मां कहती, 'बेटे ! तुम रहने दो। चीज़ तुम्हारे हाथ से गिर पड़ेगी, और तुम्हारे पैर में चोट लग जाएगी।'

'हां' और 'ना' का यह सिलसिला चलता रहता है, इसी बीच बालक अपनी सोची हुई चीज़ उठाकर कर ले जाता है, और मां से कहता है। मां! तुम तो कहतीं थीं कि मेरे पैर में चोट लग जाएगी। लेकिन देखो, मुझ को तो कोई चोट लगी नहीं!'

हमारे घरों में ऐसी घटनाएं घटती ही रहती हैं। इधर मां मना करती है। उधर बच्चा अपनी पसंद का काम करना चाहता है। मां अपनी मनाही का कारण बताती है। उधर बच्चा मां की बात को ग़लत साबित कर देता है। मां को लगता है कि बच्चा उसकी बात सुन नहीं रहा है। वह सिर-फिरा बन गया है। बच्चा सोचता है कि मां नाहक मना करती रहती है, और उसको गलत-सलत समझाती है। मां कहती है, 'यह हो जाएगा, वह हो जाएगा। बच्चा साबित कर देता है कि वैसा कुछ होता नहीं है। इधर मां बच्चे को काम करने से रोकना चाहती है। उधर बच्चा काम क़रके दिखा देता, और मां की बात को उलट देता है। इस तरह मां को मना करने की, और बच्चे को मां की बात न मानने की आदत पड़ जाती है।

अपनी बात मनवाने का एक अजीब-सा शौक हमको होता है। इसके लिए हम बालक को डांटते-डपटते रहते हैं, और उसको मारते-पीटते भी हैं। बीच-बीच में हम उसको लालच भी दिखाते रहते हैं। मां-बाप की बात न सुनने वाले बालक के ऐसे हालत होते हैं, और वैसे हालत होते हैं, इस बात को उसके गले में उतारने के लिए बालक को तरह-तरह की कहानियां सुनाई जाती हैं, और उस पर यह असर डाला जाता है कि उसको अपने बड़ों और बूढ़ों की बात माननी चाहिए। न मानने से उसको पाप लगता है। नदी उसको बहाकर ले जाती है, या वह खौलते हुए पानी के कड़ाह में गिर कर मर जाता है, अथवा मगर उसको निगल जाता है। लेकिन मां-बाप की ऐसी मनाहियों की परवाह न करके अपनी मरजी का काम करने वाला बालक तुरंत ही समझ जाता है कि मां-बाप की मनाही बिलकुल बनावटी है। कभी मां-बाप की कही बात सच भी निकलती है, तो ऐसे मामलों में बालक अपने अनुभव से यह समझ लेता है कि वह ठीक से चल नहीं पाया, इसलिए गिर पड़ा। मां-बाप के मना करने पर भी वह खेलने चला गया था, इसलिए उसको चोट लगी, ऐसी कोई बात असल में होती नहीं है। ऐसी स्थिति में कुछ बालक यह भी मानते हैं कि अपने मां-बाप की बात न मानने से वह गिरा, या उसको चोट लगी। लेकिन बच्चों का यह विचार लंबे समय तक टिक नहीं पाता। अगर टिकता है, तो बालक में कार्य-कारण को ग़लत रीति से जोड़ने की आदत उत्पन्न हो जाती है। उसके मन में यह शक भर जाता है कि मां-बाप की बात न मानने से उसका कुछ-न-कुछ नुकसान होता ही है।

हमें अपने बालकों को ग़लत ढंग नहीं समझाना नहीं चाहिए। जहां बालक की वास्तविक सुरक्षा के लिए उचित रोक लगाना बहुत ज़रूरी हो जाए, वहीं हम उसको रोकें, और रोकने के बाद जब तक बालक रोक के कारण को ठीक से समझ न ले, तब तक हम उसको सच्चे कारणों की जा़नकारी देते रहें, बिलकुल नन्हें बालकों को भी धीमे से समझाते हुए यदि हम उनको सही जानकारी देते हैं, तो वे उसको समझ लेते हैं।

लोक-शिक्षा का काम करने वाले हमारे कुछ लोग बालकों को ऐसी कहानियां सुनाते हैं, जिनमें यह बताया जाता है कि बालक ने अपने मां-बाप की बात नहीं मानी, इसलिए वह मर गया! लेकिन अफ्रीका में लोक-शिक्षा का काम करने वाले अपनी ऐसी कहानियों के द्वारा मां-बाप को यह सिखावन देते-से लगते हैं कि इस तरह मनाही करके वह बालक को जहां-तहां जाने से रोके नहीं!

❑ **गिजु भाई**

('मां-बाप बनना कठिन है' से साभार)

'चित्रकला के आसपास' श्रृंखला में तुम अब तक 11 लेख पढ़ चुके हो। लेकिन इन पर तुम्हारी ओर से कोई ख़ास प्रतिक्रिया/टिप्पणी आदि नहीं मिली है। ऐसे में श्रृंखला को जारी रखना अच्छा नहीं लग रहा है। तुम्हारी क्या राय है इस स्तंभ के बारे में ? हमें लिखो। अपने सुझाव भी लिखना। और हां, सिर्फ इस स्तंभ के बारे में नहीं अन्य स्तंभों के बारे में भी लिखना।

फिलहाल इस अंक से चित्रकला के आसपास श्रृंखला स्थगित कर रहे हैं।

नीम



पत्तियां



निबौरी



फूल

नीम के पेड़ को तो तुम अपने आसपास देखते ही होगे। यह इतना चिर-परिचित पेड़ है कि एक पल को हमें लगता है, इसके बारे में ऐसा क्या है जो हमें नहीं पता!

हालांकि नीम के पेड़ बरगद और पीपल की तरह बहुत विशाल तो नहीं होते, फिर भी काफ़ी बड़े होते हैं। इनकी ऊंचाई 50 से 70 फुट तक देखी गई है। इसकी छाया घनी और तना लगभग सीधा होता है। कहते हैं कि नीम भारत का ही पेड़ है, लेकिन मलाया, चीन, बर्मा आदि देशों में भी पाया जाता है।

भारत में यह उन पहाड़ी इलाकों को छोड़कर, जहां बहुत अधिक ठंड पड़ती है, सभी जगह पैदा होता है। इसे गर्म देश ही प्यारा है।

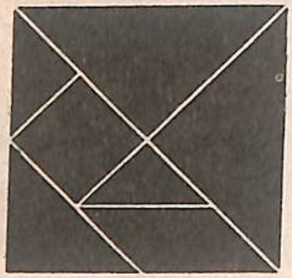
जाड़ा ख़त्म होते ही, इसके पुराने पत्ते गिर जाते हैं और नए निकल आते हैं। नीम के एक पत्ते में बहुत छोटी-छोटी उनतीस या इकत्तीस पत्तियां होती हैं। अपने पत्तों के कारण ही यह पेड़ सुंदर लगता है।

फिर छोटे-छोटे सफ़ेद फूल डालियों पर लद जाते हैं। फूलों में सुगंध होती है और रस भी। फूल में पांच पंखुड़ियां होती हैं। पंखुड़ियों के बीच पराग से भरी हुई एक रचना होती है। इस पराग के कारण फूलों पर मधु-मक्खियां तथा रस पीने वाले शकरखोरा, फूलचुही आदि पक्षियों की भीड़ लगी रहती है।

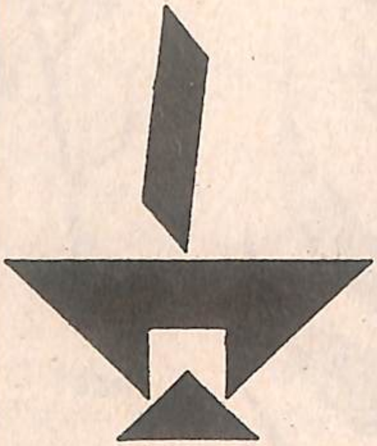
नीम के फल छोटे और हरे होते हैं जिन्हें 'निबौरी' कहा जाता है। नीम के पत्ते तो कड़वे होते हैं, लेकिन फल नहीं। इसीलिए वे पक्षियों को बड़े स्वादिष्ट लगते हैं। इन्हें खाने के लिए तरह-तरह की चिड़ियां इन पर आकर जम जाती हैं। तोतों का तो यह अड्डा ही बना रहता है। कोयल भी दोपहर के शांत समय में अक़्सर नीम के पेड़ पर कुह-कुह का राग अलापती रहती है।

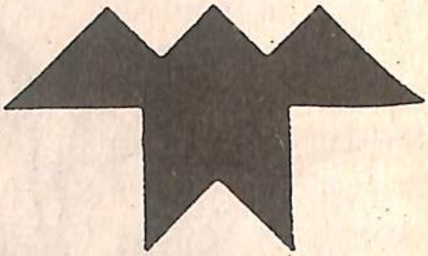
नीम बहुउपयोगी वृक्ष है। नीम के पत्ते कड़वे होने के कारण ही अलमारी, बक्सों तथा अनाज आदि की कोठियों में रखे जाते हैं, ताकि कीड़े न लगें। पकी हुई निबौरियों से तेल निकाला जाता है। जो औषधियों के रूप में काम आता है। नीम की टहनियां दातौन के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं। तने की छाल और तने से निकलने वाली गोंद भी दवा के तौर पर काम में ली जाती है। बीज से खली बनती है।

□□□



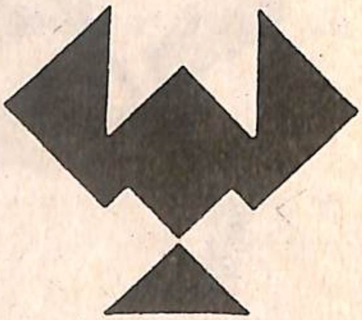
टेनग्राम के इन सात टुकड़ों को जोड़कर यहां दी गई विभिन्न आकृतियां बनी हैं। तुम भी बना देखो। (हल अगले अंक में)



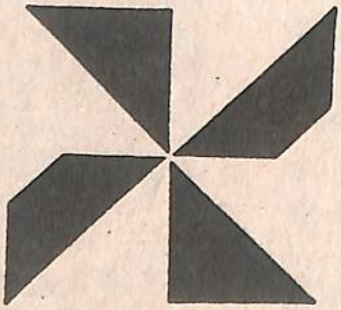


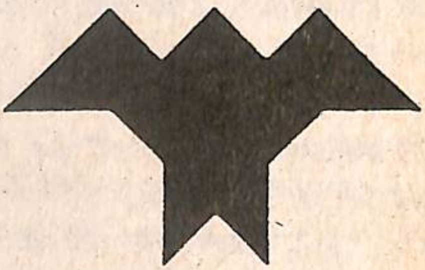








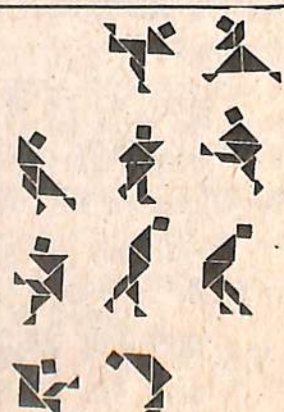








मार्च, 92 अंक के हल



रमेश अनमना बढ़ता चला आ रहा था। गिनती की भांति बढ़ते हुए उसके क़दम ही थे जो उसे लिए जा रहे थे। स्कूल में मास्टर ने उसे मारा था। कसूर कि आज पांच में से दो सवाल उसके ग़लत निकले। क्लास का वह अव्वल लड़का है। हिसाब में होशियार है। मास्टर सब लड़कों को दिखाकर उसकी तारीफ़ करते हैं। आज उसी के दो सवाल ग़लत आए, तो मास्टर को गुस्सा आ गया। गुस्सा न आता, अगर लड़कों में किसी के भी सवाल सही न आते। मास्टर रमेश को बहुत चाहते थे। पर जब उसी के दो सवाल ग़लत और दूसरे एक लड़के के पांचों सवाल सही आए तो मास्टर को बड़ी झुंझलाहट हुई।

तिस पर एक शरारती लड़के ने कहा, ''मास्टर जी, तीन तो मेरे भी सही हैं। और आप रमेश को होशियार बताते हैं।''



मास्टर ने कोई जवाब नहीं दिया। गंभीरता से कहा, ''रमेश, यहां आओ।''

रमेश डरता-डरता पास आया।



''हाथ फैलाओ।''

रमेश ने हाथ फैलाए। मास्टर ने हाथ के फुटे को कसकर दो-तीन बार उसकी हथेली पर मारा और कहा, ''जाओ, उस कोने में मुर्गा बनकर खड़े हो जाओ।''

रमेश क्लास का मानीटर था। मास्टर ने कहा, ''सुना नहीं? जाओ मुर्गा बनो।''

रमेश चलकर अपनी जगह आया और बस्ता खोलकर बैठ गया।

मास्टर ने यह देखा तो गरजकर बोले, ''रमेश! सुना नहीं? हमने क्या कहा? जाकर मुर्गा बनो!''

जवाब में रमेश गुम-सुम बैठा रहा।

मास्टर तब अपनी जगह से उठकर आए और कान पकड़कर रमेश को खड़ा करते-करते दो-तीन चपत कनपटी पर रख दिए, फिर धकियाते हुए कहा, ''निकल जाओ, मेरी क्लास से।''

रमेश क्लास से निकलकर चला। घर पर आया तो मां ने पूछा, ''क्या है?''

रमेश चुप।

''क्या है? ले, ये संतरे तेरे लिए रखे हैं।''

रमेश गुम-सुम बैठा रहा और कुछ नहीं छुआ।

मां ने हंसकर कहा, ''आज के पैसे का ऐसा क्या खाया था जो भूख नहीं लगी? और हां, क्या आज स्कूल की छुट्टी इतनी जल्दी हो गई?''

जवाब में रमेश ने सवेरे मिला पैसा अपनी जेब से निकाला और तख़्त पर रख दिया, बोला-चाला नहीं।

मां ने पूछा, ''क्यों रे, क्या हुआ जो ऐसे कर रहा है?''

रमेश नहीं बोला और बीच बात में उठकर दूसरे कमरे में खाट पर पैर रखकर, अंगुली के

नाखूनों को मुंह से कुतरता हुआ बैठा रहा।

मां फल की तश्तरी लेकर आई। कहा, ''बात क्या है? मास्टर ने मारा है?''

प्यार से रखे मां के हाथों को रमेश ने अपने कंधे पर से अलग झटक दिया और जाने क्या बुदबुदाता रहा।

मां ने चिरौरियां कीं, प्यार से पूछा, मुंह में छिला संतरा जबरदस्ती दिया, पर रमेश किसी तरह नहीं माना। वह जाने ओंठों-ही-होंठों में क्या बुदबुदाता था। त्योरियां उसकी चढ़ी हुई थीं और कुछ साफ़ न बोलता था। होते-होते मां को भी गुस्सा आ गया। उसने भी दोनों तरफ चपत रख दिए, और कहा, ''बदशऊर से कितना कह रही हूं, लेकिन कुछ बोले भी। हर वक्त झिकाने के सिवाय कुछ काम ही नहीं, हां तो। बोलना नहीं है तो इधर घर में क्यों आया था? न आके मरे सामने, न क्लेश मचे।''

रमेश इस पर कुछ देर तो वहीं गुम-सुम बैठा रहा! फिर खाट छोड़कर मुंह उठाकर घर से बाहर चल दिया।

मां ने कहा, ''कहां जाता है? चल इधर।''

पर रमेश चलकर उधर नहीं आया, आगे ही बढ़ता गया। इस पर ज़रा देर तो मां संयम में रही, फिर झपटी आई और सीढ़ी उतर दरवाज़े से बाहर झांकी, तो गली के मोड़ तक रमेश कहीं दिखाई नहीं दिया। मां इस पर झीकती बड़बड़ाती भीतर गई और सोचने लगी, 'यह रमेश के पिता के काम हैं कि ज़रा-से लड़के को इतना सिर चढ़ा दिया है। तारीफ़ कर-करके आज यह हाल कर दिया है। मां को तो कुछ समझता ही नहीं। मेरा क्या, ऐसे ही बिगड़कर आगे कुल को दाग लगाएगा तो मैं क्या जानूं। अभी हाथ में नहीं रखा लड़का फिर क्या बस में आने वाला है? उचक्का बनेगा और नहीं तो....।'

उधर रमेश बढ़ा चला जा रहा था। चलने में उसके दिशा न थी, न क़दमों में बराबरी थी। चलते-चलते वह घास के मैदान में आ गया और वहां एक जगह बैठ गया। धूप में इतनी तेज़ी न थी धीरे-धीरे वह ढलती जा रही थी। दूर तक दूब का गलीचा बिछा था। पार पेड़ों से घिरी सड़क बल खाती जा रही थी। एकाध छूटी गाय घास चर रही थी। ऊपर फैले नीले आसमान में इक्की-दुक्की चील उड़ती दिखती थी। बैठे-बैठे उसे आधा, एक, दो घंटे हो गए। इस बीच वह कुछ भी ख़ास नहीं सोच पाया, मारने वाले न मास्टर थे, न मां थी। बैठे-बैठे उसका गुस्सा और बड़बड़ाहट सब घुल गया था। उसमें मास्टर जी और मां की मार की शिकायत न थी।

देखा कि एक पिल्ला जाने कहां से बिछड़कर उसके आस-पास कुछ ढूंढ रहा है। वह कू-कू कर रहा है। कभी रुककर कुछ सोचता है, और कभी भाग छूटता है। रमेश की तबियत हुई कि वह उसके साथ खेले। जब तक पास रहा, वह पिल्ले की तरफ देखता रहा। उसकी अठखेलियां उसे प्यारी लग रही थीं। पर जाने वह पिल्ला उससे कितनी दूर था-इतनी दूर कि मानो उसके और पिल्ले के बीच समुद्र फैला हो। वह ख़ुद इस पार हो, और पिल्ला दूसरी पार और वह उसके खेल में हिस्सा न ले सकता हो। पिल्ला खेल के लिए हो और वह बस देखने के लिए।



धीरे-धीरे वह पिल्ला कू-कू करता पास आ गया। बिल्कुल पास आ गया। रमेश मुग्ध बना उसे देखता रहा। पर मुंह से आवाज़ देकर हाथ फैलाकर उसे बुला न सका। पिल्ला पास से और पास आता हुआ उसे बड़ा प्यारा लगता था।

रमेश एकदम चुप और शांत पड़ा था। वह ख़ुश होता कि पिल्ला उसकी छाती पर चढ़कर उसके अकेलेपन को भंग कर डालता। वह चाहता था कि कोई उसे खेलने को साथी मिले। पर पिल्ले ने पास आकर रमेश के मुंह के पास सूंघा, क़मीज़ के छोर को सूंघा, फैले हुए पैरों की अंगुलियों के पास नाक लगाकर उसे सूंघा और फिर लौटकर चल दिया।

रमेश उत्सुक था। वह बाट में था कि वह पिल्ला ज़रूर उससे उलझेगा। पर इतने पास आकर जब वह लौट चला तो रमेश ने एक भारी सांस छोड़ी। मानो उसके मन में हुआ कि ठीक है, यह भी मुझसे नाराज़ है। कोई उसे नहीं चाहता है।

इसी तरह काफ़ी देर वह बैठा रहा। अब सांझ हो चली। दूर पगडंडी पर घास में लोग आ-जा रहे हैं। पेड़ चुप हैं। सड़क पर मोटरें इधर से उधर भागती निकल जाती हैं। होते-होते सहसा वह उठा। उसके मन में कुछ न रह गया था। न इच्छा, न अनिच्छा, न क्रोध न ख़ुशी। बस एक अलक्ष्य के सहारे वह अपने घर की ओर चल दिया।



चलते-चलते, अरे, वह क्या? वह दो डग लौटा, झुक कर देखा। सचमुच रुपया ही था। उसने उसे दबाया, इधर-उधर देखा। एकदम रुपया ही था। उसे बड़ी खुशी हुई। लेकिन फिर सहसा अपनी खुशी को मानो ग़लत जानकर वह भारी हुआ। रुपया जेब में रख लिया और धीर-गंभीर बनकर चलने लगा। पर पैसे की क़ीमत का उसे पता था। एक पैसे में मिठाई की आठ गोलियां आती हैं। एक रुपए में चौंसठ पैसे होते हैं। चौंसठ में से हर पैसे की आठ-आठ गोलियां और पेंसिल लाल-नीली और पेंसिल बनाने का चाकू और रबर, फुटा और परकार और मिठाई और खिलौने, और हां, नई स्लेट और चाक, चाक की लंबी-लंबी बत्तियां और कांच की रंग-बिरंगी गोलियां और लट्टू और पतंग और गेंद और सीटी..इस तरह बहुत-सी चीज़ों की तस्वीरें उसके मन में एक-एक कर आने लगीं। वे बड़ी जल्दी-जल्दी आ रहीं और ग़ुजर रहीं थीं। उसके मन की आंखों के आगे से जैसे एक जुलूस ही निकलता जा रहा था। उनको देखकर मन में उछाह आता था। पर अब भी वह ऊपर से गंभीर था और आहिस्ते-आहिस्ते चला जा रहा था।

धीमे-धीमे कदमों में तेज़ी आ गई। मानो अब उनमें लक्ष्य है। उसने जेब से रुपया निकाला, और फिर देखा। वह जल्दी घर पहुंचना चाहता था। वह मां को कहेगा- नहीं, नहीं कहेगा। रुपए को जेब में रख लेगा और कुछ नहीं कहेगा। पर नहीं, मिठाई मां को भी दूंगा। सब को दूंगा, सब को मिठाई दूंगा।

इस तरह चलते-चलते रमेश अपने घर के दरवाज़े पर पहुंचा और वहीं से उत्साह में चिल्लाया, "अम्मा! अम्मा!"

उसकी अम्मा की कुछ न पूछिए। रमेश के चले जाने पर कुछ देर तक रूठी रही। फिर यहां-वहां डोल कर उसकी खोज करने लगी। पर रमेश वहां मिला, न यहां। पड़ौस के घरों से पूछा, पर उन्हें ख़बर न थी। फिर भले-बुरे विचार उसे घेरने लगे। आख़िर हार-हूर कर घर में



जैनेन्द्र कुमार
(1905-1988)

जैनेन्द्र कुमार प्रेमचंद्र की पीढ़ी के लेखक थे। संभवत: उनकी कुछ कहानियां तुमने अपनी पाठ्यपुस्तकों में पढ़ी होंगी। यह कहानी उस समय लिखी गई थी जब रूपए में सौ पैसे नहीं बल्कि चौंसठ पैसे होते थे। लेकिन कहानी आज भी उतनी ही ताजा लगती है।

अपने काम में लगी। 'उन्होंने ही बिगाड़ कर रख दिया है। अपनी ही चलाता है। और ज़रा कुछ कह दो तो मिज़ाज का ठिकाना नहीं। जाने कहां जाकर मर गया कमबख़्त! भला कुछ ठीक है। मोटर है, साइकिल है। फिर ये मुड़कटे डंडे वाले घूमते फिरते हैं। कहते हैं बच्चों को झोली में डाल कर ले जाते हैं। बस मेरी ही आफ़त है।'

दरवाज़े से रमेश की आवाज़ सुनते ही उसका दिल ख़ुशी से उछल पड़ा। दुष्ट ने मुझे कितना सताया। सोचा कि 'आने दो, उसकी हड्डियां तोड़कर रख दूंगी।' पर इस ख़्याल के बावजूद उसके दिल में प्यार उमड़ आया।

रमेश ने कहा, "अम्मा, अम्मा! सुन-अच्छा मैं नहीं बताता।"

अम्मा ने अपने विरुद्ध होकर डांटकर उसे कहा, "कहां गया था रे तू? यहां मैं हैरान हो रहीं हूं। अब आया तू!"

रमेश ने कुछ नहीं सुना। बोला, "अम्मा सच कहता हूं। दिखाऊं तुम्हें?"

अम्मां ने कहा, "क्या दिखाएगा? ले, आ, भूखा है, कुछ खा ले।" कहकर मां ने रमेश के कंधे पर, प्यार का हाथ रखा तो रमेश छिटक कर दूर जा खड़ा हुआ। बोला, "पास से नहीं, दूर से देखो। नहीं तो ले लोगी। ये देखो!"

"अरे रुपया! कहां से लाया है?"

"रास्ते में पड़ा था।"

"देखूं।"

रमेश ने पास आकर रुपया मां के हाथ में थमा दिया। मां ने उसे अच्छी तरह परख कर देखा, एकदम खरा रुपया था।

रमेश ने कहा, "लाओ।"

मां ने कहा, "तू क्या करेगा। ला, रख दूं।"

"मेरा है।"

"हां, तेरा है। मैं कोई खा जाऊंगी।"

मां का ख़्याल था कि रुपया बेकार में डाल आएगा। रुपया पाने पर वह बेहद खुश थी। इस रुपए में अपनी तरफ से कुछ और मिलाकर सोचती थी कि रमेश के लिए कोई बढ़िया ईनाम की चीज़ मंगा दूंगी। ऐसे उसके हाथ से रुपया नाहक बरबाद हो जाएगा। पर रमेश के मन में से अभी वह जुलूस मिटा नहीं था। सोचता था कि मैं यह लाऊंगा, वह लाऊंगा। और मिठाई की गोलियां लाकर एक-एक को बहुत खिलाऊंगा। पर यह क्या कि उसकी मां अन्याय से रुपया छीन लेना चाहती है। उसको यह बहुत बेजा मालूम हुआ। उसने कहा, "रुपया मेरा है। मुझे मिला है।"

मां ने कहा, "बड़ा मिला है तुझको। कमाए तब मेरा-तेरा करना। चुप रह।"

रमेश का मन यह अन्याय स्वीकार नहीं कर सका। उसने कहा "रुपया तुम नहीं दोगी?"

मां ने कहा, "नहीं दूंगी।"

रमेश ने फिर कहा, "नहीं दोगी?"

मां ने कहा, "बड़ा आया लेने वाला। चुप

रहा।''

नतीजा यह कि रमेश ने हाथ पकड़ के रुपया लेने की कोशिश की। मां ने हंसकर मुट्ठी कस ली। कहा, ''अलग बैठ।''

पर रमेश अलग न बैठकर मुट्ठी पर जूझता रहा। मां पहले तो टालती रही। फिर बालक की बदशऊरी पर उन्हें गुस्सा आने लगा। और जब ज़ोर लगाते-लगाते अचानक रमेश ने उनकी मुट्ठी पर दांत से काट खाया तो मां ने एकाएक ऐसे ज़ोर से कनपटी पर चपत दी कि बालक सिटपिटा गया। हाथ उससे छूट गया और क्षणिक सहमा हुआ वह मां की ओर देखता रह गया। मानो पूछता हो कि, 'क्या यह सच है?' जवाब में उसने मां की आंखों में चिनगारी देखी। मां के मन में था कि, 'यह लड़का है कि राक्षस? बदमाश काटता है!'

मां की तरफ कुछ मिनट इस तरह देखकर वह अपनी कनपटी को मलता हुआ गुम-सुम वहां से चल दिया, रोया नहीं। कुछ दूर निकलने पर मां ने रुपया उसकी तरफ फैंक दिया।

रमेश ने उस तरफ देखा भी नहीं और चलता गया।

रमेश के पिता साढ़े पांच बजे दफ़्तर का काम निबटा कर घर लौटे। साइकिल आज नहीं थी, इससे सड़क छोड़कर घास के मैदान में से रास्ता काट कर चले। रास्ते में क्या देखते हैं कि एक दस-ग्यारह बरस की लड़की, भयभीत इधर-उधर रास्ते पर आंख डालती हुई चली आ रही है। सलवार-क़मीज़ पहने हैं और ऊपर सर से होती हुई एक ओढ़नी है। उसके हाथ में छोटी-सी पोटली है।



पैर जल्दी-जल्दी रख रही है और इधर-उधर चारों तरफ निगाह फैंकती हुई बढ़ रही है। चेहरे पर हवाइयां हैं और आंख में आंसू आ रहे हैं। सांस भरी-सी लेती है और कुछ मुंह में बुदबुदाती है। रमेश के बाबू जी ने पूछा, ''क्या है बेटी?''

लड़की पहले सहमी-सी देखती रही। फिर रोने लगी। ''हाय रे मैं क्या करूं? अम्मा मुझे बहुत मारेगी। अम्मा मुझे बहुत मारेगी। हाय रे, मैं क्या करूं?''

बाबू जी ने पूछा, ''क्या बात है बेटी।''

लड़की बोली, ''एक रुपया और एक इकन्नी थी। कहीं रास्ते में गिर गए।''

''कहां गिर गए? और कब?''

लड़की ने कहा, ''मैं जा रही थी। यहीं कहीं गिर गए। घर के पास पहुंचकर देखा कि नहीं हैं। अभी हाल ही मैं जा रही थी। अभी-अभी हाल। बहुत देर नहीं हुई। हाय रे, अब मैं क्या करूं? अम्मा मुझे मारेगी। अम्मा मुझे बहुत मारेगी।''

लड़की बहुत डरी हुई थी। इन सत्रह आनों की क़ीमत इस लड़की या इसकी मां के लिए ज़रूर कई रुपयों के बराबर थी। क्योंकि लड़की ग़रीब घर की मालूम होती थी।

बाबू जी ने पूछा, ''रुपया कहां गिरा बेटी?''

लड़की ने यहां-वहां और सभी जगह बताया कि गिरा हो सकता है। तब बाबू जी ने कहा कि अब तो रुपया क्या मिलेगा और लड़की को दिलासा देना चाहा। पर लड़की का डर थमता न था। ''हाय रे, अम्मा मुझे बहुत मारेगी। हाय री दैया, मैं क्या करूं।

अम्मा बहुत मारेगी।''

मालूम होता था कि लड़की को मां का डर तो है ही उसके नीचे यह भी विश्वास है कि रुपया खोना सच ही इतना बड़ा कसूर है कि उस पर लड़की को सज़ा मिलनी ही चाहिए। इसी से यह डर ऊपर का नहीं था, बल्कि उसके भीतर तक भरा हुआ था। वह फटी आंखों से इधर-उधर देखती थी और कहीं कुछ सफ़ेद मिलता तो लपक कर उसी तरफ झुकती थी। पर हाथ में कभी चीनी मिट्टी का टुकड़ा आ रहता, तो कभी कोई सूखा पत्ता, या कभी सिर्फ़ चमकदार पथरी।

रमेश के बाबू जी ने काफ़ी समय लगाकर उसे सहायता दी। आख़िर रुपए और इकन्नी में से कुछ नहीं मिला तो यह कहते हुए वह विदा होने लगे कि, ''बेटा, अब अंधेरा हुआ, कल देखना। किस्मत हुई तो शायद मिल भी जाए।''

लड़की यह सुनकर इस आख़िरी हमदर्द को जाते हुए देखकर आंखें फाड़े खड़ी रही। बाबू जी बेचारे क्या करते? दिल को मजबूत कर घर की तरफ मुंह उठाए हुए चलते चले गए। ख़्याल आया कि चलूं, लौटकर एक रुपया उसके हाथ में रख दूं, और कहूं 'बेटी, इकन्नी तो इसके पास पड़ी हुई मिली नहीं, यह अपना रुपया लो।' पर इस ख़्याल को बराबर ख़्याल में ही लिए और दोहराते हुए वह एक-पर-एक डग बढ़ाते घर की तरफ चलते चले गए।

घर पहुंचे तो बाहर सड़क पर एक तरफ देखा कि बुद्ध भगवान की तरह विरक्त रमेश महाशय बैठे हैं। पिता ने कहा, ''अरे रमेश, क्यों क्या है, यहां क्यों बैठा है?''

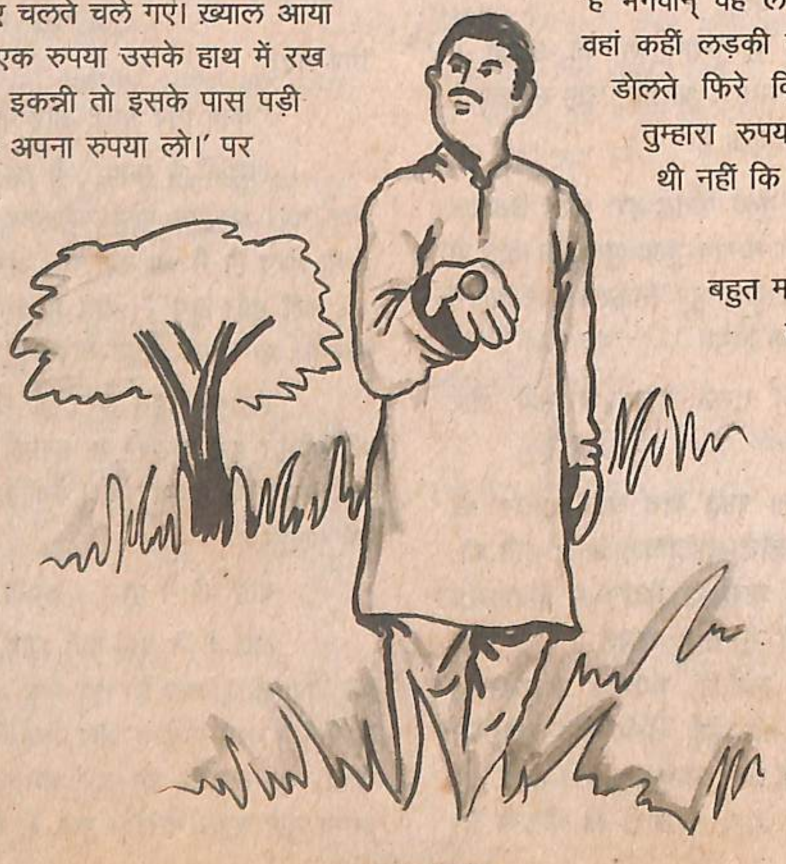
रमेश ने सुनकर मुद्रा और एकस्थ कर ली और कोई जवाब नहीं दिया।

पिता ने हाथ के झोले को दिखाकर कहा, ''अरे चल, देख तेरे लिए क्या लाया हूं।''

रमेश ने न देखा, न सुना। कोई उससे मत बोलो। किसी का उससे कुछ मतलब नहीं है। नाराज़गी में वह भभक रहा था।

रमेश के पिता मुस्करा कर आगे बढ़ गए, और अंदर जाकर देखा कि रमेश की मां भी अनमनी है। बरामदे में देखा कि एक रुपया पड़ा है। उन्होंने उठा लिया और कमरे में चहलक़दमी करते हुए कहा, ''अरे यह रुपया कैसा बाहर पड़ा था!''

इस रुपए की विस्तार से कहानी जब रमेश की मां से सुनने को मिली तो रमेश के पिता सिर पकड़कर सुन्न रह गए। कुछ देर में सुध हुई तो तेज़ चाल से उस घास के मैदान में पहुंचे कि, 'हे भगवान् वह लड़की मिल जाए।' पर वहां कहीं लड़की न थी। वे पुकारते हुए डोलते फिरे कि, ''बीबी, यह रहा तुम्हारा रुपया।'' पर लड़की वहां थी नहीं कि सुने।

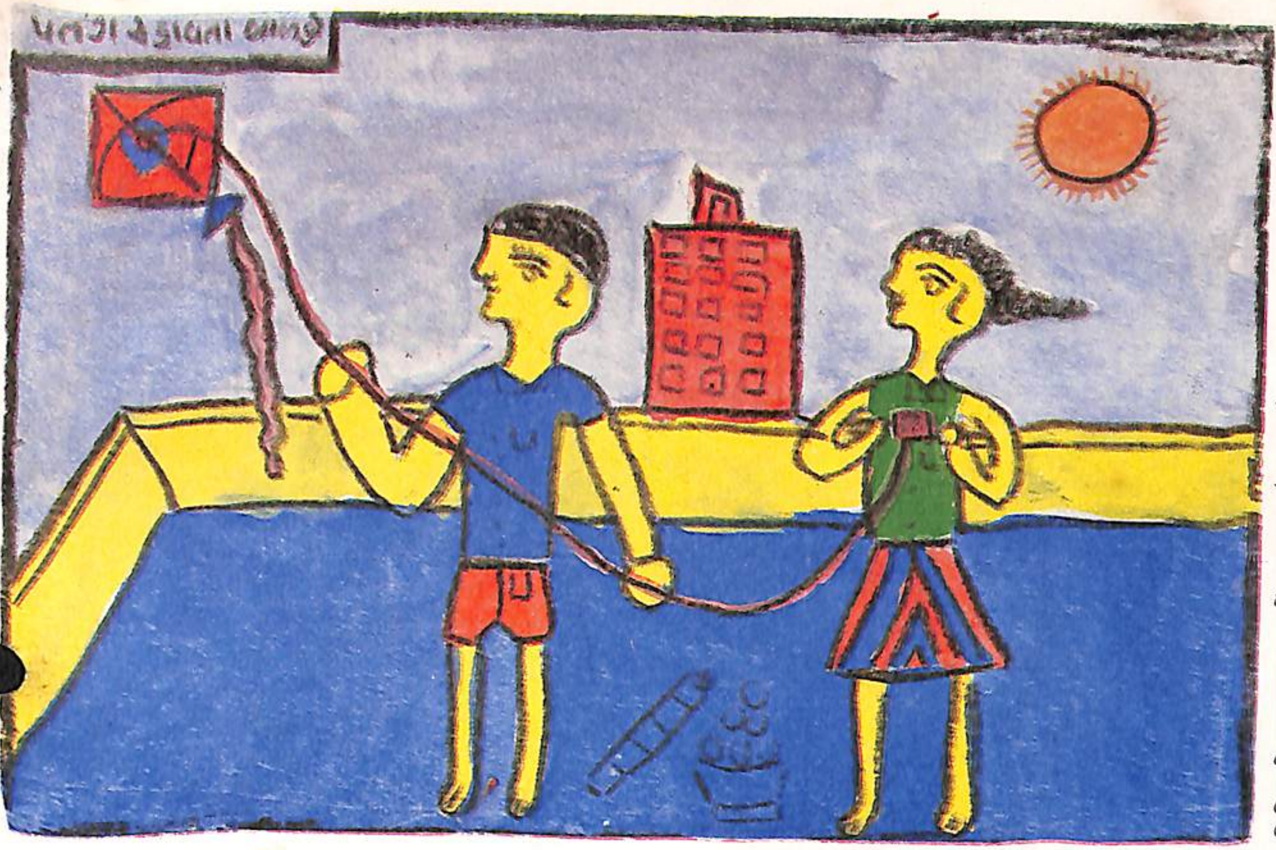


''हाय रे, अम्मा मुझे बहुत मारेगी। हाय री दैया, मैं क्या करूं। अम्मा बहुत मारेगी।''

ग़रीब लड़की के ये कातर स्वर उनके कान में गूंजते रहे।

❑ जैनेंद्र कुमार

सभी चित्र : उदय खरे

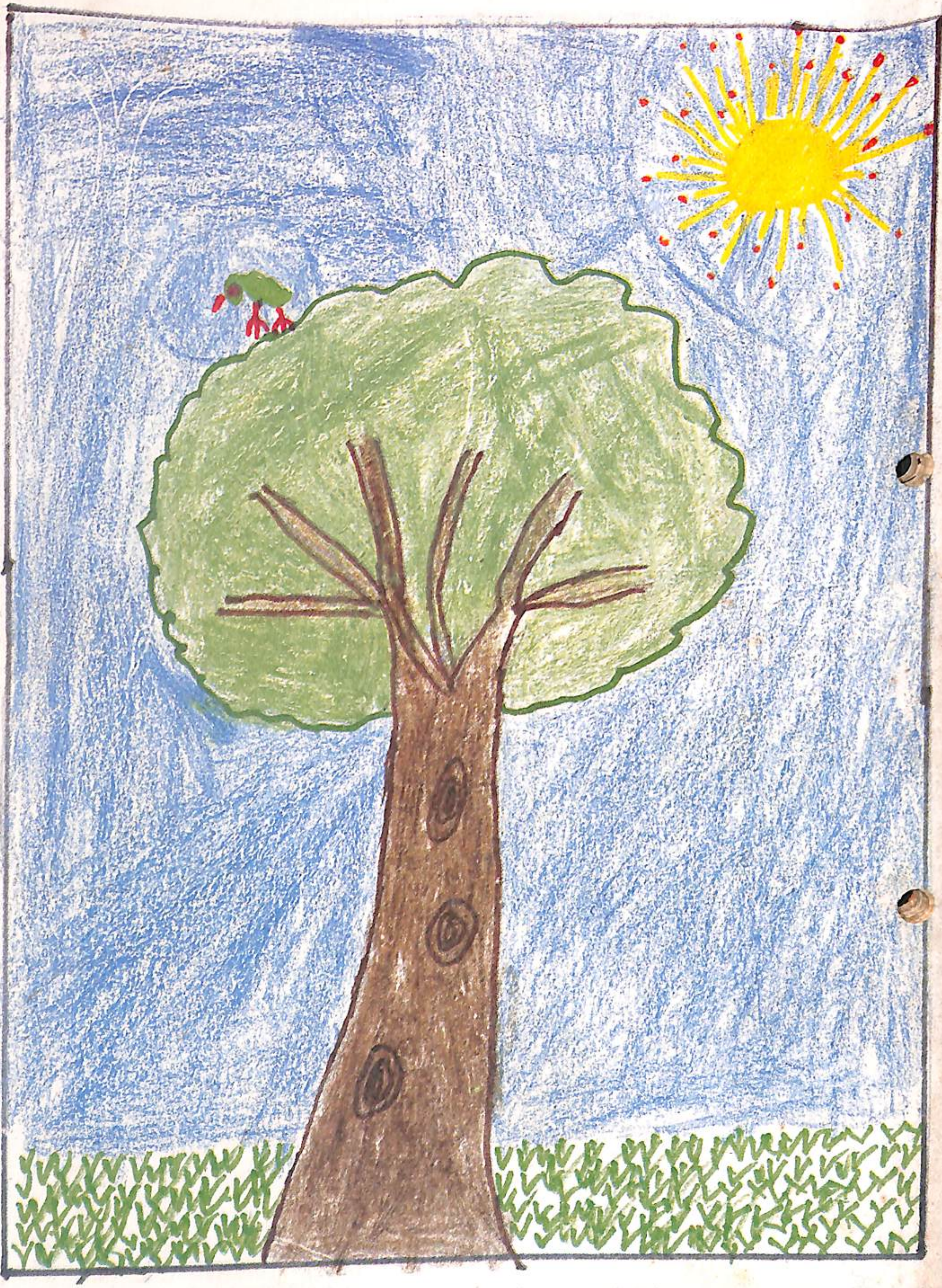


मिहिर बी. मकवाड़ा, सातवीं, भावनगर (गुजरात)



प्रिया सरवइया, चौथी, भोपाल

डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/92



मनीष ने, भेस्तानी पांचवीं, सूरत (गुजरात)

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित संपादक : विनोद रायन